શ્રી સ્વામિનારાયણ

માસિક

કિંમત રૂા. ૫-૦૦

સળંગ અંક ૫૪ ઓક્ટોબર - ૨૦૧૧

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

Praful Kharsani

H.H.Acharya Shree
Koshalendraprasadji Pande

દીપાવલી
સં. ૨૦૬૭

"ભગવાન ભજવામાં જેટલી કસર છે તેટલી તેને સર્વે ક્રિયાને વિષે ગરજ થાતી નથી"
(જેતલપુર-૫)

આપણા જીવનમાં દરેક પ્રકારની ગરજાની અપેક્ષા રાખીએ તો સર્વાવતારી સર્વોપર શ્રી હરિનું ભજન એકમાત્ર ઉપાય છે.

સત્સંગના ખપ, શ્રી હરિની આજ્ઞાઓ પાળવા પ્રત્યેનો ઝટકો [?] અને દૃઢ સ્વરૂપનિષ્ઠા, આ ત્રણ વાના ભજનમાં ઝળહળ [?] કરનાર છે. માટે સાવધાન થઈને સર્વાવતારી સર્વોપર શ્રીજીમહારાજ જેવા છે તેવા જાણી નિત્ય ભજનનો આગ્રહ રાખવો.

દીપાવલીના શુભ દિવસો અને આગામી નૂતનવર્ષ આપસૌમાં પરમ શ્રેયસ્કર, કલ્યાણકારી અને સદ્ભાવવર્ધક નીવડે તેવી પરમ કૃપાળુ શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં નમ્ર પ્રાર્થના.

શુભાશીર્વાદ

સહ [?] જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Temple, Kalupur
Ahmdabad - 380001 Phone : 22132170

Shree Swaminarayan Bagh, Memnagar,
Ahmedabad - 380052 Tel : 27478070

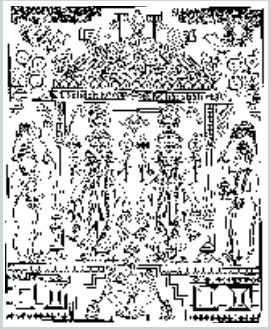

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५४ अक्टूम्बर-२०११

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	सूतक	४
०४.	हेरीटेज का रखरखाव अहमदाबाद से अमेरिका	६
०५.	श्री राधिका कृष्णाष्टक	७
०६.	श्रीहरि दर्शन का तीर्थधाम "म्युजियम"	८
०७.	प.पू. बड़े महाराजश्री के आर्शीवचन में से	९
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०९.	सत्संग बालवाटिका	१३
१०.	भक्ति सुधा	१५
११.	सत्संग समाचार	१९

अस्मदीयम्

वडताल के ११ वें वचनामृत में श्रीहरि ने कहा है कि ''अमे भगवान नो भक्त, ब्राह्मण अने गरीब ने द्रोह न थई जाय ते माटे सतत डरता रहीये छिये। केम के तेना थी तो जीव नो नाश थई जाय छे। आचार्य श्री स्वयं श्रीजी के ही स्वरुप हैं ऐसा स्वयं श्रीजीने कहा है। इसके अलांवा वे स्वयं ब्राह्मण हैं उसमें भी जिसकी कोई तुलना नहो ऐसे पवित्र कुल के है इसके साथ ही हरिभक्त अर्थात् श्रीहरिमें अचल निष्ठावाले है, स्वभाव से अत्यंत गरीब हैं।

इस बात को स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने पुरुषोत्तम प्रकाश में लिखा है कि -

धर्मवंशी ते धर्ममां रहेशे रे, अधर्म वात मां पग न देशे रे।
माटे धर्मवाला जीव जोई रे, कर्या छे में आचारज दोई रे।
एह अधर्म नहि आचरशे रे, घणुं अधर्म सर्ग थी डरशे रे।

अपने इष्टदेव के इन वचनों से हमें याद रखना है कि धर्मवंशी आचार्य की आज्ञा में हमारा जीवन हो इसी में कल्याण है।

विजयादशमी को अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३९ वां प्रागट्योत्सव मूली मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में तथा संत-हरिभक्तों द्वारा धूमधाम के साथ मनाया गया। ऐसा उत्सव-महोत्सव किसी भी जीव को अन्तिम समय में याद आजाय तो उस जीव का बड़ी सरलता से कल्याण हो जायेगा।

ऐसे उत्सव मनाने के लिये स्वयं श्रीजी महाराज ने जीवके कल्याण हेतु प्रवर्तित किया है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव के मंदिर का तथा सिंहासन का जीर्णोद्धार हेतु सेवा का अमूल्य अवसर

सर्वोपरि इष्टदेव परब्रह्म परमात्मा श्रीहरि ने संप्रदाय में सर्व प्रथम अमदाबाद में स.गु. आनंदानंद स्वामी द्वारा तीन शिखरवाला भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था जिसमें अपने ही स्वरुप में श्री नरनारायणदेव को अपने बाहों में भरकर समस्त सत्संग के लिये प्रतिष्ठित किया था तथा मोक्ष का मार्ग खोल दिया था। वर्तमान में इस मंदिर को १९० वर्ष हो गये। जिससे जीर्णोद्धार की आवश्यकता समझकर सिंहासन पर संगमरमर का पत्थर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से लगाने का कार्य प्रारंभ हो गया है। प्रिय भक्तो ! प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा लिखी गयी ''वचनामृत में श्री नरनारायणदेव'' पुस्तक में भरत खंड के राजा श्री नारायणदेव'' का जो माहात्म्य वर्णन किया गया है वह यह कि श्री नरनारायणदेव को मैंने अपना स्वरुप जानकर ही आग्रह पूर्वक सर्व प्रथम श्रीनगर में प्रतिष्ठित किया है। इसलिये श्री नरनारायणदेव में तथा हममें थोड़ा भी भेद (अन्तर) नहीं है, ये ही ब्रह्मधाम के निवासी है।'' (अम. ६) इसलिये प्रिय भक्तों ! ऐसे अपने इष्टदेव की सेवा का अवसर बार०बार नहीं मिलता। इसलिये ऐसे दिव्य मंदिर की सेवा में आपका धन लगेगा तो वह अवश्य द्विगुणित होकर मिलेगा इसके साथ ही आपकी भावि पीढी का निश्चय ही आत्मकल्याण होगा तथा मोक्ष की अधिकारी भी बनेगी। इसलिये ऐसे अवसर को जाने नहीं देना चाहिये, अपनी शक्ति के अनुसार आफिस में धनराशि की भेंट देकर पक्की रसीद अवश्य लें और अपने जीवन को कृतार्थ बनावे।

आज्ञा से
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०११)

८. जलझीलणी एकादशी के दिन श्री गणपतिजी के शोभायात्रा प्रसंग पर पदार्पण।

११. आकाश रेसीडेन्सी में ट्रावेल्स आफिस के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण न्यु राणीप।

प.भ. भावेश देवाजी प्रजापती के यहाँ पदार्पण किये घोडासर।

प.भ. हेमराजभाई नारणभाई परमार के यहाँ पदार्पण किये - वेजलपुर।

एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण, मेमनगर

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में पारायण प्रसंग पर पदार्पण किये।

२३. गोहील नरेन्द्रभाई अमरसिंह के यहाँ पदार्पण किये, बडसर

२५. प.भ. प्रबोधभाई छगनलाल झाला के यहाँ पदार्पण किये, गांधी रोड।

प.पू. लालजी महाराज के कार्यक्रम की रुपरेखा

१. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री गणपतिजी का स्थापन करके आरती अपने हाथों से उतारे

६. गडुगाँव के हरिभक्तों द्वारा आयोजित मूलीधाम के पदयात्रियों को आशीर्वाद देने पधारे।

८. भाद्र शुक्ल-११ को श्री गणपतिजी के शोभायात्रा में पधारे।

२५. न्यु राणीप सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२७-३० बद्रिनाथधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण किये।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**

सूतक

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्रीमद् महापुराण में धर्म के चार चरण सत्य, दया, तप तथा शौच बताया गया है। उसमें शौच अर्थात् मन, वाणी तथा क्रिया से पवित्रता रखनी चाहिये। मनुष्य के जीवन में शारीरिक तथा मानसिक आचार विचार के अधःपतन में मूल कारण सौच की अवगणना है।

अपने धर्म शास्त्र - निर्णय सिन्धु, धर्म सिन्धु इत्यादि ग्रन्थों में शौच के अन्तर्गत जन्म-मरण के समय पवित्रता न रखने से हानि होती है ऐसा वर्णन किया गया है। स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है कि जन्म तथा मृत्यु के समय बड़ी पीड़ा होती है। उसमें भी मृत्यु के समय कोटि बिच्छू के डंक की वेदना होती है। वह वेदना जन्म एवं मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति के आत्मीयों में १४ पीढी तक के लोगों को थोड़ा बहुत तो होती ही है।

वैज्ञानिक दृष्टि से रक्त (खून) का सम्बन्धबहुत दूर तक रहता है। सगे सम्बन्धिमें खून का अति सूक्ष्म प्रमोझोन जीन्स सभी में एक समान रहता है जिससे सुख-दुःख के होर्मोन की असर सभी को होती है। इससे सामान्य बनने में तीन से दश दिन तक का समय लगता है। इसीलिये सूतक के नियम का पालन करने के लिये ही शास्त्रो में नाना विधवर्णन मिलता है। इसी संबंधके नाते पितृकर्म, नांदीश्राद्ध, श्राद्धकर्म द्वारा व्यक्ति अपने पूर्वजो को तृप्त कर सकता है।

मृतक के सूतकी व्यक्ति का कोई अन्य भी स्पर्श करे तो उसके स्पर्शास्पर्श का दोष लगेगा। इसलिये स्नान किया जाता है।

जन्म के सूतक में माता को छोड़कर अन्य को नही लगता। शिक्षापत्री के ८८ वें श्लोक में भगवान स्वामिनारायणने सूतक पालने का नियम बताया है। शतानंद स्वामी ने शिक्षापत्री भाष्य में उसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। यह भाष्य सभी शास्त्रों का सार है। महाराज ने लिखा है कि हमारे आश्रित सभी सत्संगी तथा वर्णाश्रमी लोग अपने सम्बन्धके अनुसार जन्म-मरण के सूतक का नियम पालन करें। ब्राह्मणादिक चारो वर्ण वाले अपने पितरों के संबन्धानुसार पिंडादि प्रदान धर्म शास्त्र के अनुसार करें। अपने कुल में पुत्र या पुत्री के जन्म का सूतक सात पीढी तक दश रात्रि सूतक का नियम पाले।

अंगिरस स्मृति में कहा है कि सभी वर्णों के लोग जन्म तथा मरण का सूतक पाले, दश दिन तक असौच रहता है। सात से चौदह पीढी तक आत्मीयजनों को तीन रात्रि का अशौच लगता है ऐसा अग्नि ने कहा है। पुत्र जन्म में सात पीढी तक दश दिन का सूतक पालने से शुद्धि होती है। सात पीढी से ऊपर तीन दिन तक सूतक रहता है। पुत्री के जन्म में सभी को तीन दिन तक का अशौच रहेगा। सूतकी के स्पर्श में अंगिरस ने कहा है कि जन्म का सूतक हो तब अन्य के स्पर्श में दोष नहीं। यदि सूतिका का स्पर्श होजाय तो भी स्नान मात्र से शुद्धि होती है। उन दिनों देव सम्बन्धी तथा पित्रि सम्बन्धी कर्म नहीं करना चाहिये। पैठीनसि मुनिने कब से कर्माधिकार है इस पर बताया है - यदि पुत्र के जन्म वाली सूतिका हो तो २० रात्रि के बाद ही काम कराना चाहिये, यहि पुत्री के जन्मवाली सूतिका हो तो एक मास के बाद यह २० दिन तथा ३० दिन १० दिन के सूतक के बाद से गिनना चाहिये। जन्म का सूतक हो तो दान लेने देने में दोष नहीं लगता, इसके लिये व्यासजी कहते है कि - पुत्र-पुत्री के जन्म से सूतक के समय भी पहला दिन, छट्ठा दिन, दशवां दिन तो दान पुण्य करने के लिये ही हैं ऐसा निर्णय सिन्धु में लिखा है।

मरण के सूतक में विशेष कहा गया है - कि सात पीढी के सम्बन्धियों को १० दिन तक सूतक का नियम पालना चाहिये। चौदह पीठी तक के सगे सम्बंधियों को तथा समान गोत्रवालों को एकतीस पीढी के लोग स्नान मात्र से शुद्ध होत हैं. याज्ञवल्क्य तथा पराशर कहते हैं कि दांत आने तक में मृत्यु हो तो स्नान मात्र से शुद्धि होती है। मुंडन के बाद मरण हो तो एकरात्रि तक का सूतक, नामकरण संस्कार के बाद मरण हो तो तीन रात्रितक का सूतक, इसके बाद के संस्कार हुये हों तो दशरात्रि तक का सूतक लगता है। माधवीय तथा ब्रह्मपुराण में भी कहा है कि विवाहिता स्त्री का जनन या मरण पिता के घर हो तो उसके भाईयों को एक दिन का सूतक तथा माता पिता को तीन दिन में शुद्धि

होती है। निर्णय सिन्धु में लिखा है कि - आचार्य, माता के पिता, पुत्री के पुत्र की मृत्यु हो जाय तो तीन दिन का सूतक तथा तीन रात्रि का सूतक लगेगा। चौदह पीढी वालों को जन्म तथा मरण में सूतक समान ही रहेगा। अपनी फूआ, मौंसी का बेटा, मामा का बेटा, बापकी फूआ, बाप की मौसी या बाप के मामा का बेटा तथा माता की फुआ, माता के मामा का बेटा इन सभी सम्बन्धियों के मरण पर तथा शिष्य, सास, मित्र श्वसुर, बहन-भांजा इन सभी के मरण पर एकरात्रि का सूतक लगेगा। माता की माता, बहन, मामा, मामी अपने देश का राजा तथा गाँव का मुखिया मरे तो तारा सूतक लगता है या सूर्योदय का सूतक रहता है। दिन में मृत्यु हो तो तारा सूतक, रात्रि में मृत्यु हो तो सूर्योदय तक सूतक रहता है। शिष्य, उपाध्याय, गुरु का मित्र, आचार्य की पत्नी, चौदह पीढी से ऊपर का सगोत्री यदि मृत्यु को प्राप्त हो तो (अपने घर में या दूसरे के घर में मृत हो तो) एक रात्रि का सूतक लगता है। मिताक्षरा में स्पष्ट दिया गया है कि बेटी का बेटा, बहन का बेटा, इनके उपनयन के बाद मृत्यु हो तो तीन रात्रि तक का सूतक होगा। यदि उपनयन संस्कार न हुआ हो तो एकदिन का ही सूतक लगेगा।

सूतक के नियम का पालन किस तरह करना चाहिये इस विषय पर पैठीनस मुनि कहते है कि - द्विजाति में अग्निहोत्री के विना किसी की मृत्यु हो जाय तो मरण के समय से सूतक लगता है। यदि अग्निहोत्री हो तो दाह के बाद सूतक लगता है। यदि प्रसव के दश दिन बाद पता चले तो सूतक नहीं लगता। माधवीय पुराण में देवल ऋषि कहते है कि जन्म के सूतक का समय यदि बीत गया हो तो दोष नहीं लगता। मरण के सूतक में वृद्ध वसिष्ठ कहते हैं कि मरण की सूचना तीन महिने बाद मिले तो भी तीन दिन का सूतक लगता है। ६ महीने के बाद खबर पड़े तो तीन रात्रि का सूतक लगता है। यदि नव महीने के बाद सूचना मिले तो एकदिन का सूतक लगता है। इसके बाद तो स्नान मात्र से शुद्धि होतीहै। यह सूतक एकदेश में रहने वालों के लिये है - अन्य देश में रहने पर स्नान मात्र से शुद्धि बताई गयी है। अब देशान्तर के विषय में बृहस्पति कहते हैं - बड़ी नदी या पर्वत बीच में आता हो या वहाँ की भाषा अलग हो उसे देशान्तर कहते हैं। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि ६० योजन (२५० कि.मी.) के अन्तर को भी देशान्तर कहते है। लेकिन यह व्यवस्था पितरों को छोड़कर अन्यों के लिये है ऐसा स्मृतिसार में कहा गया है। माता या पिता के मरण की सूचना यदि पुत्र विदेश में एक वर्ष के बाद भी प्राप्त करता है तो उसे १० दिन का सूतक लगेगा। इसी तरह स्त्री भी १० दिन का नियम पाले।

विरक्त साधुओं को माता-पिता के मरणकी सूचना मिलने पर मात्र स्नान से शुद्धि, उन्हें सूतक पालने की आवश्यकता नहीं। ऐसा लिंग पुराण में कहा गया है। हेमाद्रि में लिखा है कि एक जन्म के सूतक में दूसरे जन्म का सूतक आवे अथवा एक मरण में दूसरे मरण का सूतक आवे तो पहले सूतक से दूसरा सूतक शुद्ध हो जाता है। मरण के सूतक में जन्म का सूतक आवे तो वह शुद्ध हो जाता है लेकिन जन्म के सूतक में यदि मरण सूतक आजाय तो वह शुद्ध नहीं होता। इसलिये सूतक का नियम पालना ही पड़ेगा। बडे सूतक में छोटा सूतक शुद्ध होता है लेकिन छोटे सूतक में बड़ा सूतक शुद्ध नहीं होता।

कूर्म पुराण में लिखा है कि आपत्ति काल में तथा उपद्रव के समय मात्र स्नान से शुद्धि होती है। शुद्धि रत्नाकर में भी दक्ष ने कहा है कि शान्तिकाल में यह सूतक का विधान कहा गया है। आपत्ति काल में तो सूतक वालों को भी सूतक नहीं लगता। उदाहरण के रुप में - शिल्पी, नापित, कारीगर, रोगी, पराधीन, कर्मवाला, सन्यासी, ब्रह्मचारी, व्रत के नियमवाला, राजा, वर, यज्ञ कराने वाला, अनेक श्रुतियों को पढा हुआ, वैद्य, तेली इन्हें सूतक नहीं लगता। इसके अलांवा दान देनेवाला, उपनयन, यज्ञ, श्राद्ध-युद्ध, प्रतिष्ठा, मुंडन संस्कार, तीर्थयात्रा, जप, विवाह इन सभी के आरम्भ हो जाने पर मात्र स्नान से शुद्धि होती है सूतक नहीं लगता। स्मशान के मार्ग में शब के पीछे चलने वाले को स्नान से शुद्धि . सूतक में नित्य कर्म-सन्ध्यादि समंत्रक नहीं करना चाहिये। मानसी पूजा का विधान है। सास-श्वसुर यदि मृत्यु दी दामाद के घर हो जाय तो दामाद को तीन दिन का सूतक लगता है। जन्म के सूतक में मंदिर में दर्शन का निषेधनहीं है। विवाह में गणेश स्थापना, मंडप स्थापन या लग्न पत्रिका लिखने के बाद बीच में जन्म या मृत्यु का सूतक नहीं लगता। विवाह पूर्ण होने के बाद सूतक पालना चाहिये।

हेरीटेज का रखरखाव अहमदाबाद से अमेरिका

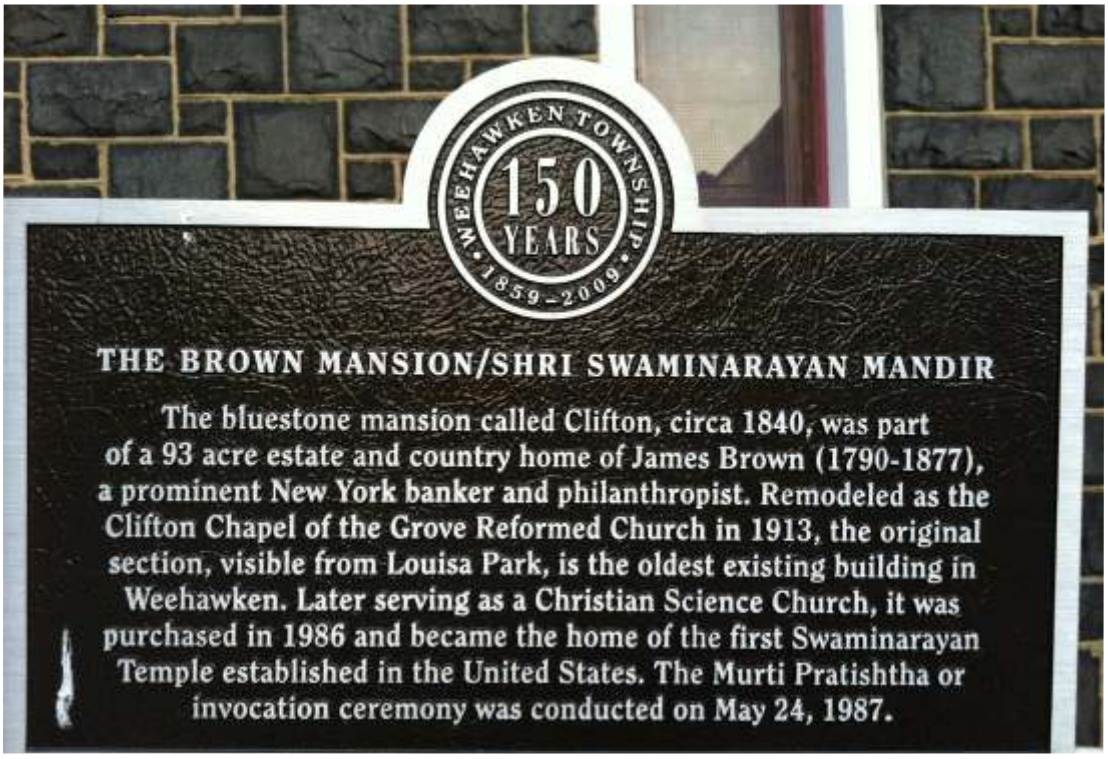

अहमदाबाद को ६०० वर्ष पूर्ण हो गया ।उस संस्कृति की रक्षा हेतु लोगो में जागृति आवे इसलिये अपने मंदिर से म्युझियम तक प्रतिदिन हेरीटेज वोक का आयोजन किया जाता है । इसके साथ ही अमदावाद मे पुराने मकान, मार्ग, गली इत्यादि का दर्शन कराया जाता है । काष्ठ की कलाकृति वाली मूली की हवेली हो या कविवर्य दलपतराम का जन्म स्थल हो अपना संप्रदाय सदा संस्कृति को जागृत रखने में अग्रसर रहा है । संस्कृति के रखरखाव हेतु प.पू. बड़े महाराजश्री ने म्युझियम का स्वप्न देखा और साकार किया ।

यही हुई अपने भारत देश की वात लेकिन भारत के बाहर विदेश में भी इन्टरनेशनल श्री स्वामिनारायण सत्संग ओर्गेनाईझेशन (आई.एस.एस.ओ.) द्वारा विहोकन (न्युजर्सी) से विदेशो में भी मंदिर निर्माण कार्य प्रारंभ हो गया है । विहोकन में जो मंदिर है वह सबसे पुराना है । जहाँ पर १९१३ में चर्च बनाया गया था तथा २४ मई १९८० में अमेरिका की धरती पर श्री स्वामिनारायण मंदिर का रुप देकर प.पू. बड़े महाराजश्रीने मूर्ति प्रतिष्ठा की थी । अपने मंदिर के बाहर बोर्ड पर इसका इतिहास लिखवा गया है । वहाँ के कोर्पोरेशन में बोर्ड में मंदिर का नाम सर्व प्रथम उल्लेख किया है । संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर श्रीजी महाराज ने अहमदाबाद में बनाया तथा अहमदाबाद के गादीपतिने अमेरिका में सर्वप्रथम मंदिर बनवाया । इस तरह मूल संप्रदाय विदेश में भी मूल संप्रदाय के रुप में प्रतिष्ठित हो गया ।

श्री राधिका कृष्णाष्टक

- साधु अभयप्रकाशदास गुरु महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

नवीनजीमूतसमानवर्णं, रत्नोल्लसत् कुण्डलशोभिकर्णम्।
महाकिरीटाग्रमयूरपर्ण, श्री राधिका कृष्णमहं नमामि ॥

नवीन मेघ के समान श्याम वर्ण की जिनकी शोभा है, रत्नों से जडित कुंडल को दोनो कानो में धारण किये हुये हैं, बड़े मुकुट में मयूर के पिच्छ को धारण किये हुए है ऐसे राधिका के साथ श्रीकृष्ण भगवान को मैं नमन करता हूँ।

निधाय पाणिद्वितयेन वेणुं, निजाधरे शेखरयातरेणुम्।
निनादयन्तं च गतौ करेणुं, श्री राधिकाकृष्णमहं नमामि ॥

दोनो हाथ में वंशीको धारण किये हुये, अपने अधरोष्ठ पर वासुंरी को रखकर मधुर स्वर का नाद करते हुये, हाथी के समान चाल वाले, पुष्पराग गिरते हुये माला को धारण किये हुए राधिका सहित श्रीकृष्ण भगवान को मैं नमन करता हूँ।

विशुद्धहेमोज्ज्वलपीतवस्त्रं, हतारियूथं च विनापि शस्त्रम्।
व्यर्थीकृतानेकसुरद्विड, श्री राधिकाकृष्णमहं नमामि ॥

शुद्ध सोने के समान उज्ज्वल पीताम्बर को धारण करने वाले, शस्त्र धारण किये विना भी शत्रु समूह का नाश करने वाले, असुरों के अनेक प्रकार के अस्त्रों का व्यर्थ करने वाले श्री राधिकासहितकृष्ण को नमन करता हूँ।

अधर्मतिष्यार्दित साधुपालं, सद्धर्मवैरासुरसङ्घकालम्।
पुष्पादिमालं व्रजराजबालं, श्री राधिका कृष्णमहं नमामि ॥

अधर्म तथा कलि से पीडित साधुओं का पालन करने वाले, सत् धर्म के सहज शत्रुं ऐसे मयूर असूर का नाश करने वाले, पुष्पादि माला को धारण करने वाले व्रजराज के वालक श्री राधिका सहित श्रीकृष्ण को नमन करता हूँ।

गोपि प्रियारम्भित रासखेलं, रासेश्वरीरञ्जनकृत्प्रहेलम्।
स्कन्धोल्लसत् कुंकुंमचिन्ह चेलं, श्री राधिका कृष्णमहं नमामि ॥

गोपियों को प्रिय ऐसी रास खेलने वाले, रासेश्वरी (राधा) के चित्त को आनन्दित करने वाली लीला है जिसकी, शोभायमान कुंकुम से चिन्हित वस्त्र को धारण करने वाले (उत्तरीय वस्त्र) ऐसे श्री राधिका सहित श्रीकृष्ण को मैं नमन करता हूँ।

वृन्दावने प्रीततया वसन्तं, निजाश्रितानापद उद्धरन्तम्।
गोगोपगोपीरभिनन्दयन्तं, श्री राधिका कृष्णमहं नमामि ॥

वृन्दावन में प्रेम से निवास करने वाले, अपने आश्रितो की आपत्ति को दूर करने वाले, गाय, गोप, गोपियों को आनंद देने वाले ऐसे श्री राधिका सहित श्रीकृष्ण को नमन करता हूँ।

विश्वद्विषन्मन्मथदर्पहारं, संसारिजीवा श्रयणीयसारम्।
सदैव सत्पुरुष सौख्यकारं, श्री राधिका कृष्णमहं नमामि ॥

विश्व के द्वेशी ऐसे कामदेव के गर्व का हरण करने वाले, संसार के जीवों के लिये एकमात्र आश्रय, सत्पुरुषों को सदा सुख देने वाले, ऐसा राधिका के सहित श्रीकृष्ण को मैं नमन करता हूँ।

आनन्दितात्मव्रजवासितोकं, नंदादिसंदर्शिदिव्यलोकम्।
विनाशितस्वाश्रितजीवशोकं, श्री राधिका कृष्णमहं नमामि ॥

अपने व्रजवासी बाल मंडली को आनंदित करने वाले, नन्द आदिक गोपों को अपने दिव्य लोक का दर्शन कराने वाले, अपने आश्रित जीवों के शोक को नष्ट करने वाले ऐसे श्री राधिका के साथ श्रीकृष्ण को हम नमन करते हैं।

श्रीहरि दर्शन का तीर्थधाम "म्युजियम"

- पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)

जहाँ शिक्षापत्री वहाँ पर श्रीहरि का वास । जहाँ शिक्षापत्री का वांचन पूजन में होता है वहीं पर सुख-शांति तथा लक्ष्मीजी का वास है । जिस घर में श्रीहरि के आज्ञानुसार वर्तन (व्यवहार) होता है वह स्थान तीर्थ समान है । जहाँ श्री स्वामिनारायण मंत्र गूंजे वहीं पर श्रीहरि का निवास ।

स्कंद पुराण के वासुदेव माहात्म्य में कहा गया है -

यादृशः यस्य सङ्गः स्यात् शास्त्राणां वा नृणामपि ।
बुद्धिः स्यात् तादृशी तस्य कार्योऽतो नासतां हि सः ॥

जिस प्रकार के शास्त्रों का मनुष्यों का संग होता है वैसा उसका कार्य होता है । इसलिये शिक्षापत्री का वाचन सभी को अवश्य करना चाहिये । श्रीहरि कहते है कि -

चोर पापि व्यसनिनां सङ्गः पाखण्डितां तथा ।
कामिनां च न कर्तव्यो जनवञ्चन कर्मणाम् ॥

चोर, पापी, व्यसनी, पाखण्डी, कामी, ठग इत्यादि लोगों से सदा दूर रहना चाहिये । कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग तथा भक्ति मार्ग का सहारा लेकर शिक्षापत्री के अनुसार आदरपूर्वक - आत्मनिष्ठा के साथ श्रीहरि की आज्ञा का जो पालन करता है वह मोक्ष का अधिकारी होता है ।

जो शिक्षापत्री का वांचन, श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन करते हैं तथा श्रीहरि की आज्ञापलन करते हैं उनके शुद्धाचण पर भगवान प्रसन्न होते है । वही उद्धव संप्रदाय का तथा सच्चा स्वामिनारायण संप्रदाय का धर्मकुलाश्रित वैष्णवजन कहा जायेगा ।

सकल लोक मां सहुने वंदे, निंदान करे केनी रे ।
वाच, काछ, मन निश्चल राखे धन धन जननी तेनी रे ॥

जो अपनी माता की, कुल की, गाँव की, तथा राष्ट्र की इज्जत बढाता है वही सच्चा राष्ट्र भक्त है वही श्रीहरि का सच्चा भक्त है ।

जो दारु, माटी, चोरी, परस्त्री संग त्यागकर श्रीहरि के लीला चरित्रों का गुणगान करता है तथा भजन कीर्तन के साथ स्वधर्म का पालन करता है, गृहस्थ धर्मपालन करता है, उससे दुराचार व्यभिचार, भ्रष्टाचार नष्ट होता है । आतंकवादी प्रवृत्रि त्रासवादी प्रवृति श्रीहरि की शिक्षापत्री को रखने से रुक जाती है. इसरह शिक्षापत्री द्वारा राष्ट्र में शांति की स्थापना संभव है । जिसके वांचन से सत्य, न्याय, धर्माधर्म का ज्ञान होता है । जिससे व्यभिचार दुराचार भष्टाचार, हिंसा रुक सकती है । जिससे सर्वव्यापी शांति की स्थापना हो सकती है वह है शिक्षापत्री ।

शिक्षापत्री को महाराजने, "मद्रुपमिति मद्वाणी" कहा है । वडताल के पांचवे वचनामृत में कहा है कि प्रभु के विना (शिक्षापत्री विना) दूसरे रो सुखदायक नहीं समझना, प्रभु की इच्छानुसार ही वर्तन करे, प्रभु की शरणागति करने वाला जीव ही सच्चे अर्थ में सत्संगी एवं आश्रित एवं भक्त है । ऐसे जीवों का कल्याण करने के लिये प्रभु आते हैं । सारे जगत के प्राणी प्रभु के बालक है, अपने भाई बहन हैं । इस प्रकार की भावना से शुद्ध सदाचार तथा धर्म के ज्ञान की गंगा की तरह चारो तरफ पैल जायेगी । इस तहर आज्ञा पालन करने वाले आरोग्य क्षेत्रमें तन, मन स्वस्थ रखकर स्वास्थ्य यकी रक्षा कर सकते हैं । जन मन के शुद्ध होते ही श्रीहरि लीला चरित्र सुनना संभव है ।

"श्री स्वामिनारायण म्युजियम में "

भगवान के मनुष्यावतार के समय जिन वस्तुओं का उपयोग हुआ था प्रायः उन्हे एकत्रित करके दर्शनार्थ रखा गया है । प्रत्येक दर्शन स्थल पर आध्यात्मिक ज्ञान से पूर्ण दर्शन की सीडी लगाई गयी है . जिससे लीला चरित्र का ज्ञान होता है । इससे संप्रदाय के विषय में फैली हुई गलतफहमी दूर हो सकेगी । भविष्य में शुद्ध उपासना, प्रणालिका तथा श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित आश्रितों के लिये गुरुपद पर धर्मवंश के दो आचार्य (श्री नरनारायणदेव अमदावाद गादी के आचार्य, तथा श्री

पेईज नं. १२

प.पू. बड़े महाराजश्री के आर्शीवचन में से

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापूनगर)

हर्षद कोलोनी में महापूजा के प्रसंग पर (ता. २८-८-११ को एक सन्यासी थे । उनको एक शिष्य था । शिष्य गुरु से सदा कहता कि हमें भगवान का साक्षात्कार करना है । गुरुजी शिष्य से कहते कि जब समय आयेगा तो दर्शन करादेंगे । एक गुरुजी अपने शिष्य को नदी में स्नान के बहाने ले गये । सन्यासी शिष्य को नदी में उतारकर कहे कि अब डुबकी मार । तुम्हें भगवान का दर्शन कराता हूँ । शिष्य को तैरने नहीं आता था । शिष्य जब पानी में डुबकी लगाया, उसी समय गुरुजी शिष्य के मस्तक को पानी मे दबाये रखे । वह श्वास लेने के लिये परेशान हो रहा था, इसलिये गुरुजीने उसका मस्तक छोड़ दिया । अब वह बाहर निकल कर गुरुजी से कहा कि भगवान का दर्शन तो नहीं हुआ लेकिन आप ऐसा क्यों किया । मुझे मारडालने की इच्छा है क्या ? गुरुजी ने कहा कि तुम्हे शिक्षा देने के लिये मैने ऐसा किया । पानी के भीतर वायु के अभाव से जिस तरह तूं तडफड़ा रहा था इसी तरह भगवान की प्राप्ति के लिये तड़फड़ायेगा तो निश्चित तुम्हें भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन होगा ।

यह एक लौकिक दृष्टांत था । अब अपने संत्संग के लिये विचार करें तो भगवान का दर्शन बहुत सरल है । हमें प्रतिदिन भगवान का दर्शन होता है । कारण यह कि सत्संग में महाराज प्रत्यक्ष विराजमान रहते हैं । जगत के लोग धर्ममय जीवन यापन करने से मरने के बाद स्वर्ग के सुख को प्राप्त करते हैं । लेकिन वह सुख तो सत्संगी मात्र को अभी मिल गया है । सामान्य ढंग से धाम का तथा गाँव मार्ग अलग-अलग है । दोनो का मेल नहीं है । परंतु महाराजने दोनो का मार्ग एक कर दिया है । धाम में जाना हो तो भी गाँव या घर छोड़ने की जरुरत नहीं । गृहस्थ भी धाम में जा सकते हैं । लेकिन महाराज की आज्ञा में रहना पड़ेगा । महाराज की इच्छा में अपना जीवन यापन करना पड़ेगा । जिस तरह महाराजने शिक्षापत्री में आज्ञा की है उसी तरह अक्षरशः पालन करने की जरुरत है । महापूजा भी उन्हीं के लिये है ।

किसी संकल्प की सिद्धि के लिये महापूजा में नहीं बैठना चाहिये बल्कि महाराज को प्रसन्न करने के लिये बैठना चाहिये । महाराज विशेष मेरे ऊपर प्रसन्न हों यह भावना रखना चाहिये । जो भक्त महाराज की आज्ञा में वर्तन करते है उनके महाराज बहुत प्रसन्न होते हैं । सौराष्ट्र के भक्त हमें पहले से बहुत प्रिय लगते हैं । इसलिये कि आपलोग महाराज की इच्छा से वर्तन करते हैं । दासभाई, खिचाडिया इत्यादि लोग म्युजियम की खूब अच्छी तरह से देखभाल कर रहे हैं । हम इन लोगों पर प्रसन्न है क्योंकि हमें म्युजियम बहुत प्रिय है ।

श्री सौराष्ट्र पटेल समाज निकोल - नरोडा आयोजित छठे विवाह प्रसंग पर (ता. २०-२-११) भगवान सभी नवदम्पती पर प्रसन्न हों ऐसा आशीर्वाद दे रहे हैं । भगवान प्रसन्न हों तो क्या देंगे । सद्बुद्धि देंगे ? सद्बुद्धि आवे तो पीछे-पीछे लक्ष्मीजी आवें फिर सुख शांति मिलती है । यदि भगवान कुबुद्धि दें तो जो कुछ है वह भी धीरे-धीरे नष्ट हो जायेगा । इसलिये आप सभी लोग भगवान की भक्ति करके सद्बुद्धि प्राप्त करके सभी प्रकार से सुखी हों ऐसी भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (बापुनगर) आयोजित म्युजियम के उपलक्ष्य में ५१ वीं धुन के प्रसंग पर (ता. ५-२-११) दान तीन प्रकार का होता है । कितने लोग शरीर से सेवा करते हैं । कुछ लोग मन से सेवा करते हैं । जिसे हम तन, मन, धन से सेवा कहते हैं । परंतु हम चौथे प्रकार का दान देखे, तो वह है भजन का दान । यह दान सभी दान की अपेक्षा श्रेष्ठ है । जिसे आपलोगों ने म्युजियम के लिये समर्पित किया है । भजन की कभी पूर्णाहुति नहीं होती । म्युजियम के उद्घाटन के बाद इसका अच्छी तरह संचालन हो इसलिये भजन को चालू ही रखना होगा । इस म्युजियम को विधिवत् आप सभी

को अर्पण करना है। अभी आप लोग एक बालक को बुलाकर हार पहनाइये, वह बालक वचत करके म्युजियम में सेवा की है। वह अकेला नहीं आया था - अपने मित्रों के साथ आया था। आप सभी म्युजियम के दर्शनार्थ पधारे और साथ में मा-बाप एवं सगे सम्बन्धिको ले आये, इन सभी के जीव का कल्याण होगा।

अभी म्युजियम में एक भाई आये थे। बहुत साफ बोलने वाले थे। हमसे कहने लगे कि सायद आप मुझे नहीं पहचान रहे हो क्यों कि मैं आपकी संस्था का नहीं हूँ। आपसे लगी हुई संस्था का आदमी हूँ। पता नहीं क्यों हमारा मन यहाँ आने को कहता रहता है। इसीलिये मैं म्युजियम के लिये सवालाख रुपये देने आया हूँ। इनकी भावना स्वीकार करके मुझे ऐसा लग रहा था कि जिस तरह भीम कौरवों के पक्ष से लड़ रहे थे लेकिन मन पाण्डवों की तरफ रहता था। मन श्रीकृष्ण में अर्पण कर दिये थे। इसीलिये अन्तिम समय में भगवान श्रीकृष्ण दर्शन देने पधारे थे। इसी तरह इस भाई पर श्रीजी महाराज प्रसन्न होने वाले होंगे इससे निश्चित हो रहा है।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने ता. २१-२-११ को एप्रोच (बापूनगर) मंदिर में महापूजा प्रसंग पर अपने आशीर्वचन में एक द्रष्टांत देते हुये कहे कि -

बादशाह अकबर के दरबार में तानसेन नाम का एक अच्छा गायक था। सुन्दर संगीत के साथ गीत सुनाकर बादशाह को प्रसन्न करता था। एक दिन बादशाह तानसेन से कहा कि - तुम्ह अपने गुरु का हमें दर्शन करा दो। बाद में तानसेन बादशाह को अपने साथ अपने गुरु के पास ले गया। वहाँ बादशाहने देखा कि गुरु गाने में तल्लीन हैं। आश्चर्य की बात तो यह थी कि तानसेन की अपेक्षा हजार गुना अधिक गुरु गायन में आगे थे। बादशाह ने इसका रहस्य गुरु से पूछा, परंतु गुरु गायन में इतना अधिक मशगुल थे कि बादशाह की आवाज अनसुनी जैसी थी। उन्हें उस गायन में अपने शरीर का भी भान नहीं था तो किसी की आवाज कैसे सुन सकते हैं। अब बादशाह तानसेन से इसका रहस्य पूछा। तानसेन ने कहा कि जहाँ पनाह। मैं जो गायन करता हूँ आपको प्रसन्न करने के लिये करता हूँ। परंतु मेरे गुरुजी जो गायन करते हैं वह किसी मनुष्य को प्रसन्न करने के लिये नहीं करते, बल्कि परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये गाते हैं। इसलिये गुरुजी हमारी अपेक्षा हजार गुना अधिक अच्छा गाते हैं।

इस द्रष्टांत से हमे यह सीखना है कि महापूजा इत्यादि जो भी सत्कर्म करते हैं या भजन भक्ति करते हैं वह प्रभु को प्रसन्न करने के लिये करें तो निश्चित ही प्रभु इस निष्काम भक्ति से खूब प्रसन्न होंगे।

दीवाली का कार्यक्रम

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२ ता. २४-१०-२०११ सोमवार बजे के बाद धनलक्ष्मी पूजन का मुहूर्त है तो पूजा रात्रि में ७-३० से ९-३० को होगी।

आश्विन कृष्ण पक्ष-१३/१४ ता. २५-१०-२०११ मंगलवार को काली चर्तुदशीं श्री हनुमानजी की पूजन आरती शाम ७-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न होगी।

आश्विन कृष्ण पक्ष-३० ता. २६-१०-२०११ बुधवार को दीपोत्सवी-दिपावली अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रसादी के सभामंडप में समूह शारदा पूजन शाम को ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से विधिपूर्वक संपन्न होगा।

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१ ता. २७-१०-२०११ गुरुवार नूतन वर्ष के दिन श्री गोवर्धन पूजन-बलिपूजन ठाकुरजी का अन्नकूटोत्सव मनाया जाएगा।

मंगल आरती : प्रात ५-०० बजे

श्रृंगार आरती : प्रात: ६-३० बजे

अन्नकूट आरती : सुबह १०-१० बजे (दर्शन दोपहर १२-०० से ४-०० बजे)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से होगी। उसके बाद बैठक (ओफिस) में दर्शन-आशीर्वाद का लाभ मिलेगा।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम दर्शनार्थियों के अन्तर में यहाँ आने के बाद निरव शांति मिलती है । सभी के हृदय में श्रद्धा का दीपक प्रज्वलित होता है । श्री स्वामिनारायण म्युजियम को फ्रेन्डली बनने के मार्ग पर आगे बढ रहा है। म्युजियम में जो बिजली का उपयोग होता है वह प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की दूरदर्शिता के कारण बिंडमील (पवन चक्की) द्वारा उत्पन्न बिजली से सम्भव हो सका है। यह पवनचक्की चालू हो गयी है। श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का रखरखाव बहुत जरुरी है, इस अनीवार्यता का ख्याल रखकर तथा पर्यावरण का ख्याल रखकर ही पवनचक्की को लगाया गया है । इससे कुदरती व्यवस्थानों से अगल बगल के लोगों में प्रदूषण का प्रभाव तथा आवाज नहीं होगी । किसी भी धार्मिक स्थल पर वींडमील का प्रयोग नहीं हुआ है, यहाँ का प्रयोग सबसे प्रथम कहा जायेगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली

रु. १,२५,०००/-	श्री महेन्द्रभाई पटेल वती पंकजभाई, सरलाबहन, ज्योतिकाबहन (माणकी घोडीपर श्रीजी महाराज के स्टेच्यु हेतु)
रु. ५०,०००/-	वाडीभाई रामभाई पटेल - कुंडला के कला भगत के वंशज नवरंगपुरा
रु. ४०,१०१/-	क्रिष्नाबहन रीतेशकुमार पटेल, मणीनगर
रु. ११,०००/-	अ.नि. मणिलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब के जन्मदिन के निमित्ते हितैषी हरिभक्त - नन्दलाल भाई कोठारी ।
रु. ११,०००/-	अ.नि. मणिलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब के जन्म दिन के अवसर पर गौतमभाई शंकरलाल पटेल ।
रु. १०,०००/-	डी.डी. त्रिवेदी अहमदाबाद ।
रु. ५,९४४/-	एन. एछ. प्रधानानी मुंबई
रु. ५,५००/-	पटेल डाह्याभाई बाभाई दास परिवार, गवाडा
रु. ५,००१/-	डॉ. पी.एच. पटेल माणसा ।
रु. ५,००१/-	श्री नरनारायण युवक मंडल धोलका ।
रु. ५,००१/-	रमाबहन ठाकर, अहमदाबाद ।
रु. ५,०००/-	कोशल कोर्पोरेशन बोपल अहमदाबाद ।
रु. ५,०००/-	पटेल कंचनबहन रणछोड़भाई लवजीभाई - देवपुरावाला ।
रु. ५,०००/-	चंदुभाई सोनी, अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	सुधीरकुमार परसोत्तमभाई पटेल (दासभाई, हर्षद कोलोनी)
रु. ५,०००/-	महेशभाई ए. पटेल - लालोडावाला ।
रु. ५,०००/-	ईश्वरभाई डुंगरशीभाई - मेडावाला ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची

ता. ३१-८-११	अ.सौ.प.पू. बड़ी गादीवालाजी की शुभ प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर महिला मंडल की तरफ से अरविंदाबहन, कुसुमबहन, वीणा बहन ।
ता. ८-९-११	पटेल चंदुभाई प्रहलादभाई दास वती विशाल तथा कुणाल - राणीप
ता. १८-९-११	अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब की तरफ से उनके शुभेक्षुक श्री नरनारायणदेव का अभिषेक तथा महापूजा ।
ता. २५-९-११	रमणभाई चतुरभाई पटेल परिवार की तरफ से विक्रमभाई तथा सुमनभाई तथा राजेन्द्रभाई पोर जि. गांधीनगर ।

नोट : ता. २७-१०-११ को नूतन वर्ष के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण म्युजियम में एकदिन का अवकाश रहेगा ।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

सार्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने कलियुग में अनंत जीवों के कल्याण के लिये मनुष्य रुप में अवतार धारण करके मनुष्यों के भीतर के दुर्गुणो का नाश करके भक्त बनाया था।

हमारे लिए श्रीहरिने बहुत कष्ट उठाया। भगवानने जिन वस्तुओं का स्पर्श किया, अपने शरीर परधारण किया उनहें गाँव-गाँव घूमकर प.पू. बड़े महाराजश्रीने अलभ्य कार्य को लभ्य करवाया, जो कभी के दृष्टिपथ पर आना असम्भव था वह सभी एक स्थान पर दृष्टिगोचर हो रहा है, इन सभी का सत्संग मात्र के लिये नहींअपितु बाहर के भी लोग आकर लाभ ले रहे हैं। धर्मकुल को लाख - लाख वंदन

- कनुभाई माणेकभाई पटेल, बायड

It was very nice to be here, I loved the way you have keet all the prasadi's for the future generation Museum is very very nice & clean.

- Radhe Popli - Newzaland

A tabulus place to visit, good for all the devotees, gives a very calm & good feeling, geeing the objects used by Bhagwan Shree Swaminarayan Makes his presence feel alive.

- Devendra B. Hakim - Gurgaon Mumbai

श्री स्वामिनारायण भगवान के विषय में बहुत कुछ जानने को मिला साथ में उसका तद्रुप अनुभव भी हुआ। मानसिक शान्ति भी मिली।

- नियंतिका वी. अग्नि होत्री

आज चौथी बार म्युझियम के दर्शनार्थ सपरिवार आया हूँ। जिस - जिस तरह दिव्य अनुभूति होती है, उस - उस तरह भगवान स्वामिनारायण के प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करके आत्म शांति मीलती है। - रमेशभाई जे. कोरिया मोटेरा, अहमदाबाद

सम्वत २०६८ का दट्टा साहित्य केन्द्र से उपलब्धहै

अनु. पेईज नं. ८ से आगे

लक्ष्मीनारायण देव वडताल गादी के आचार्य) आश्रितो के लिये तथा व्यवस्थापन के लिये देश विभाग के अभिलेख के साथ महाराज के समकालीन उन्हीं के हस्ताक्षरों से अंकित दस्तावेज शुद्ध सनातन धर्म रहस्य की स्पष्टता हेतु म्युझियम में रखा गया है। श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के मन में श्रीहरि की कृपा से श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण का संकल्प हुआ। जिस संकल्प को वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ''पितृदेवो भव'' का सूत्र जीवन में उतारा और सत्संग समाज को प्रेरित किया। यह आचरण सभी के लिये अनुकरणीय है। सभी के लिये प्रेरणादायक है। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा प्राप्त करके ही देश-विदेश के सभी सत्संगी ''म्युजियम'' निर्माण हमारा है यह भावना रखकर पूर्णता के कार्य में लग गये। इसी में भौतिक तथा आध्यात्मिक सुख है, यही श्रीहरि का मार्ग है, इसी में श्रीहरि का दिव्य स्वरुप छिपा हुआ है। ऐसे श्री स्वामिनारायण म्युजियम तीर्थ धाम का दर्शन करके मानव अपने जीवन को सार्थक कर रहे हैं।

श्रीहरि का दर्शन करावे, शिक्षापत्री अध्ययन,
भूलेला भटकेला मुज जेवाने, मार्ग चींधी कहे,
क्यां सुधी भटकीश, अवर संगे हरि भूली ... शिक्षापत्री
ओड़ख साचा हरिवर सहजानंद परब्रह्म ने,
निरख निराख श्रीहरिवर नी पादुका म्युजियममां ... शिक्षापत्री
मार्ग भूलेला तूं जाणे छे ? ब्रह्मानंद हरि सखा,
गोतवा निकल्या, हरिवरने वशराम कूबे ... शिक्षापत्री
मुजको देखी हंसी बोल्या, आ रही हरी पादुका,
सुनी नाद, ब्रह्मानंद केरो, कुंबा बहार आव्या ... शिक्षापत्री

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कसोटी के सिवाय कीमत नही होती

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

परीक्षा के विना स्कूल - बोर्ड, विद्यापीठ या युनिवर्सिटी प्रमाण नहीं देती । इसी तरह भक्ति के मार्ग में भी गुरु शिष्य की परीक्षा के विना अपने पास शिष्य के रुप में स्वीकार नहीं करते । जगत की परीक्षा पाठ्य पुस्तक के आधार पर तैयार करके देते है । लेकिन भक्ति के मार्ग में गुरु शिष्य की परीक्षा कभी भी ले लेते हैं किसी को पता भी नहीं चलता । आज ऐसे ऋषि तथा उनके शिष्य की वात करते हैं ।

पौराणिक काल में भारत ऋषि मुनियों का देश कहा जाता था । वर्षो पूर्व भारत वर्ष में धौम्य ऋषि नाम के एक ऋषि हो गये । उत्तम ऋषियों में उनकी गणना होती थी । उनकी प्रसिद्धि से प्रभावित होकर शिष्य वनने के लिये अनेकों लोग आश्रम में आने लगे । प्राथमिक योग्यता जानकर गुरु उन्हें प्रवेश देते थे । शिष्य की योग्यता समझने के बाद ही उन्हें आश्रम की सेवा दी जाती । जिससे शिष्य प्रसन्नतापूर्वक कार्य कर सके, ऐसे शिष्य पर गुरु की कृपा उतरती ।

धौम्य ऋषि के आश्रम आरुणिनाम का एकशिष्य आया । एक दिन गुरुजी शिष्य को बुलाकर कहे कि आज से तुम्हें खेत में सेवा करनी है । धान की रोपाई से लेकर कटाई तक सभी देख रेख तुम्हे रखनी है । आरुणि गुरुजी की आज्ञा मस्तक पर चढाया कहीं शंका भी नहीं की हम रहेंगे कहां खायेंगे - पीयेंगे कहाँ ?

गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके आरुणि प्रातः होने ही खेत में पहुंचगये । धान में पानी देना था । क्यारी बनाने आता नहीं था । नाली के सहारे पानी ले आये, लेकिन पानी का इतना वेग था कि मेड़ टूट गई पानी वेग से बाहर जाने लगा । कितना भी मिट्टी डालने पर पानी का वेग रुका नहीं तो पानी के बहाव को रोकने के लिये उस मडे की जगह स्वयं सो गया । पानी रुक गया ।अब उसे यह सरल मार्ग लगा-पानी रोकने का । रात-दिन काम में लगा रहता था उसे भूख-प्यास नहीं लगती । उसे एक मन्ना थी कि गुरु की आज्ञा में कहीं कोई कमी नहीं रहनी चाहिये ।

इधर गुरुजीने आरुणि की परीक्षा ले रहे थे उधर अन्य शिष्यों को खाने के लिये बार-बार पूछते थे । फिर भी आरुणि के मन में थोड़ा भी विकार नहीं आया गुरु के प्रति उच्च भावना बनी रही । वह यह सोचता कि आश्रम बड़ा है, छात्रों की संख्या अधिक है, गुरुजी के पास समय का अभाव है, इसलिये हमें गुरुजी से प्राप्त आज्ञा पालन श्रद्धापूर्वक करनी चाहिये ।

२५-३० दिन हो गये नहीं अन्न मिला, नही जल । बाद में एकदिन किसी बड़े शिष्य से पूछे कि आरुणि कहाँ है । क्यों दिखाई नहीं दे रहा है ? गुरुजी ! आपने उसे खेत की रखवाली के लिये भेंजा है । उसे धान की फसल में पानी डालना नहीं आता, एक खेत से दूसरे खेत में पानी डालता है जब मेड़ टूट जाती है तब उसे रोकने के लिये मिट्टी नहीं काम करती तो स्वयं सो जाता है । इस तरह बड़े कष्ट के साथ रातदिन काम करता है ।

बड़े शिष्य की वात सुनकर गुरुजीने विचार किया कि, चलो वहाँ जाते हैं । वहाँ गुरुजीने देखा कि पानी तो वेग से मेड़ टूट गयी है और आरुणि स्वयं वहाँ सोकर पानी को बहने से रोक रहा है । कपड़ा-शरीर सभी कीचड़ वाला हो गया है । भूख-प्यास से शरीर कृश काय हो गयी है । लेकिन मुख में तेज भासित हो रहा है । यह देख कर गुरुजी बहुत प्रसन्न हुये । उसे पास बुलाये गले लगाकर आशीर्वाद दिये । पुत्र आरुणि ? जगत के इतिहास में तुम्हारा नाम श्रेष्ठ शिष्य के रुप में लिया जायेगा । बड़ा विद्वान बनेगा । जगत में तुम्हारी कीर्ति फैलेगी - कहा जाता है कि -

"नाम रहता काकरा, नाणां नव रहंत ।
कीर्ति केरा कांगरा, पाड्य नव पडंत ॥"

आज भी आरुणि कीर्तमान है । गुरु के आशीर्वाद से यह महान बनकर पूजित हुआ, इसका कारण क्या है ।

बालमित्रो ! आरुणि ने जिस तरह गुरु की आज्ञा का अक्षर सह श्रद्धा पूर्वक पालन किया । विरोधया किसी भी प्रकार का प्रश्न नहीं किया । आज्ञा में अचल विश्वास ही उसकी सफलता थी । मित्रों ! आपके गुरुजी भी कभी इस

तरह आपकी परीक्षा लें तो उत्साह तथा प्रेम से उस परीक्षा में सेवा परायण रहेंगे तो निश्चित ही सफलता मिलेगी । आपके ऊपर प्रभु की कृपा होगी ।

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने भी संतो की तथा भक्तों की अनेकोंबार परीक्षा ली है ? इस परीक्षा को संत तथा हरिभक्त हंसते हुये स्वीकार किये है । इसलिये भगवान के साथ उन संतो को तथा हरिभक्तों को याद करते हैं । इतना तो याद रखना कि विना परीक्षा के किसी की कीमत नहीं होती । मिट्टी को सुन्दर रुप देना हो, लकड़ी में कला कृतिकरना हो, कपड़े का पैन्ट सर्ट बनाना हो, तो इन सभी की बड़ी से बड़ी पराक्षा ली जाती है । तभी अपनी इच्छानुसार उसे रुप दिया जा सकता है, जीवन को सुन्दर बनाना हो तो आरुणि की तरह परीक्षा देनी ही होगी । तभी सर्वत्र विजय होगी । इतना यदा रखना ।

●

इष्टदेव के नाम की महिमा

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

स्वामिनारायण संप्रदाय की आज्ञा से मोक्षरुपी सदाव्रत को भारत के कोने कोने में संत लोग चला रहे है । जिस के लिये सत्संग कथा तथा भगवान में दृढ निश्चय कराते है । कितने प्रान्तो में भाषाकीय कमी के कारण मात्र मंत्र ज्ञान देते हैं । संत अपने सद्आचरण से भक्ति का मार्ग बताते है ।

परंतु प्रत्येक क्षेत्र में सज्जन व्यक्ति मिलना मुश्किल है । सभी वन में चन्दन नहीं होता, सभी नागो में मणी नहीं होती, इसी तरह मुमुक्षु भी कम होते है । संत ऐसे मुमुक्षुओं को सद्उपदेश देते फिर भी ऐसे संतो की निन्दा करने वाला एक वर्ग तो रहता ही है । उपरोक्त बाते प्राचीन काल से चली आ रही है ।

पहले के जमाने में उत्तर प्रदेश को हिन्दुस्तान कहा जाता था । उसी हिन्दुस्तान की वात है - यहाँ पर सन्तों ने सत्संग का प्रचार किया । भगवान के उपासना का मार्ग बताया । परिणाम स्वरुप विंद नाम के एक युवक को सत्संग का रंग लग गया । संतो से माला लेकर माला फेरने लगा, मानसी पूजा करने लगा, दंडवत् ध्यान इत्यादि करने लगा ।

नित्य क्रम के अनुसार सूर्योदय से पूर्व उठ जाता, स्नान पूजा सभी करता । इस तरह का व्यवहार माता-पिताने अपने युवान बेटे में देखकर बहुत प्रसन्न थे । लेकिन उसके साथ घर में उसकी काकी रहती थी । विन्दा की काकी को उसकी भजन अच्छी नहीं लगती, उसे वात वात में टोकती और कहती कि यह जो भी करते हो यह ठीक नहीं । रात-दिन स्वामिनारायण, स्वामिनारायण क्या जपता रहता है । गाँव में धूम-धूम के शिकायत करती और कहती कि विंदा एकदम विगड़ गया है -

''कहें विंदा तो बगड़ी गयो, करी सत्संग स्वामीनो थयो ।''

निंदा करने वालो को खोजना नही पड़ता । विंदा की काकी सभी से कहती है हमारा विंदा जब भोजन करने बैठता है तो आंख बंद करके क्या क्या बोलता है, क्या यह खाने की रीत है । इस तरह रात दिन विंदा के विरोधमें बोलती रहती है ।

''श्वासे श्वासे एज स्मरण,
भूली नहीं ज्यां लगी आव्युं मरण ॥''

वह जब तक जीवित रही तब तक विन्दा की निंदा करती रही । कोई विंदा से कहा तब कि घर का सभी काम तूं करता है फिर भी तेरी काकी तेरी निंदा करती है, इस यह वह कहता काकी जो भी करती है उसमें हम दोनों का भला है । हमें इस लिये फायदा है कि मेरी काकी जितना इधर-उधर निन्दा करती है उससे हमारा विश्वास और दृढ हो जाता है । मेरी भक्ति कैसी है वह मेरी काकी से पुष्ट हो रही है । उसका लाभ कैसे ? तो एकबार निन्दा करते समय मेरा नाम लेती है तो एक बार भगवान का नाम लेती हैं । उसे भगवान का नाम लेने के लिये माला हाथ में दिया जाय तो माला हाथ में नहीं लेगी, उसे कहूं कि स्वामिनारायण - स्वामिनारायण पांच मिनट तूं बोल तो नहीं बोलेगी, लेकिन मेरी निंदा के साथ दशबार भगवान का नाम लेती है तो निश्चित ही भगवान उसका भला करेंगे ।

संयोग वश मरने के समय उसके सामने भयंकर यमदूत दिखाई दिये । अब वह चिल्लाने लगी । विंदा उसके पास गया तो उसी तरह से हमें गाली देते हुए भगवान को भी नाम लेकर गाली देने लगी ।

काकी ने ज्यों भगवान का नाम लिया कि यमदूत वहाँ से हट गये । अब काकी विंदा से कहने लगी कि बेटा अपने

पेईज नं. १८

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से -
"सच्चे भक्त का लक्षण कैसा होना चाहिये"
- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

हमें कल्पवृक्ष का आनंद लेना हो तो कल्पवृक्ष के नीचे जाना पडता है । इसी तरह परमात्मा को प्राप्त करना हो तो परमात्मा की शरणागति स्वीकार करनी चाहिये । इसके लिये सत्संग करना अनिवार्य है । सत्संग के लिये श्रद्धा आवश्यक है । भक्ति के लिये श्रद्धा प्रथम सोपान है । किसी व्यक्ति को ऐसी शंका होती है क्या कि कल सूर्योदय होगा ? रात्रि में सोते समय सभी को यह विचार आता है कि हमें कल इतने कार्य करने है, यह हो गया, यह बाकी है । लेकिन किसी को यह विचार नहीं आता कि कल सूर्योदय हो गया या नहीं ? इसी तरह परमात्मा पर संपूर्ण श्रद्धा होनी चाहिये । ऐसा करने से आपकी भक्ति सफल होगी । जिस तरह सूर्योदय होने से सर्वत्र प्रकाश फैल जाता है । सूर्यनारायण गरीब अमीर, पापी, दुराचारी का भेद भाव विना रखे समान रुप से सभी को प्रकाश देते हैं । इसी तरह परमात्मा की कृपा भी सभी जीव पर एक समान होती है । परंतु जीव को परमात्मा की कृपा का जो यह अल्पकृपा का भास होता है उसमें अन्त:करण का अज्ञान ही कारण है । जैसे - काच दोनो तरफ से स्वच्छ हो तो उसमें सूर्य प्रकाश स्पष्ट दिखाई देता है। लेकिन एक तरफ गन्दा हो तो दूसरी तरफ उसका प्रकाश नहीं आता । इसी तरह अपने अन्त:करण में अनंत जन्मों के गन्दगी रुपी दुर्गुण तथा अज्ञान सूर्य रुपी प्रकाश हृदय मेंअधिक प्रगट होगा ।

अद्वेषता : अद्वेषता का मतलब किसी भी व्यक्ति के प्रति द्वेषभाव नहीं रखना, किसी का दोष नहीं देखना ।

सन्तुष्ट : सन्तुष्ट का मतलब संतोष का गुण आना चाहिये, हमें जो मिला है वह बराबर है । इसी तरह जीव में संतोष होना चाहिये । इससे मनुष्य प्रसन्नता पूर्वक जीवन जी सकता है ।

शुद्धि : शुद्धिका मतलब जीवन में धर्माचरण । जीवन में आंतरिक बाह्य शुद्धि का होना आवश्यक । आज कलियुग में प्राय: मनुष्य के जीवन में आन्तरिक शुद्धि तो दिखाई ही नहीं देती ।

निर्मम : इसका मतलब अपनों में ममत्व का भाव - मेरा मेरा इस तरह की ममता नहीं होनी चाहिये ।

निरहंकारी पना : इसका मतलब जीवन में अहंकार का अभाव अपना अहंकार स्वयं के सफलता का मार्ग बन्द कर सकता है । किसी भी क्षेत्र में पूर्णता की स्थिति नहीं होती । कोई भी पूर्ण नही होता । उत्तरोत्तर सुधार करने से जीवन में सफलता एवं श्रेष्ठ मिलती है । इस तरह नियमित सत्संग करने से जीवन में सद्‌गुण आते हैं । परिणाम स्वरुप अन्त:करण में प्रकाश का उदय होता है और परमात्मा का वास होता है । धीरे-धीरे अज्ञान का नाश होने लगता है और ज्ञान का उदय होता है ।

एक राजा थे उनको एक पुत्र था । वह पुत्र अनेकों अपराधकिया था । वह राजा अपने पुत्र को सजा करते हैं । उसे अपने राजमहल से निकला देते हैं । जब राजा की वृद्धावस्था आती है तब उन्हें पश्चाताप होता है कि अब इस राज्य का उत्तराधिकारी कौन बनेगा ? इस तरह विचार कर राजा अपने सेवकों से कहते हैं कि मेरा बेटा जहाँ भी हो उसे वापस ले आओ । सेवक चारो तरफ खोजने के लिये निकल पड़ते हैं । राजा का पुत्र एक जगह भीख मांगते हुये मिल जाता है । लेकिन उसे इतना समय इस रुप में बीत जाता है कि अपने सत्व को खो देता है अपने राजत्व भाव को भूल जाका है । परिणाम स्वरुप राजा के सेवको से नाना विधस्मरण कराने पर कि - आप भिखारी नहीं है - आप राजा के पुत्र है - आपको आपके पिताजी पुन: राज्य में बुलाये हैं । इतना सुनते ही उसे अपने वर्षो पीछे की सभी याद स्मरण पथ पर आजाती है । और सेवकों की गाड़ी में बैठकर वापस राजमहल में आता है । जब सेवक उसे यह बताते हैं कि आप राजकुंवर हैं तब उसे अपने स्वत्व का ख्याल आजाता है और साथ में गये हुये प्रधान को गाड़ी में पीछे बैठने को कहकर स्वयं आगे बैठता है । इसका मतलब यह है कि जब व्यक्ति को मैं कौन हूं इसका ख्याल आजाता है तो उसकी वाणी तथा वर्तमान में तुरंत परिवर्तन हो जाता है । इसी तरह अपने जीवन में अहंकार नहीं बल्कि हमें अपने स्वत्व का ख्याल होना चाहिये कि हमें साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण मिले हैं । इसलिये अपनी वाणी वर्तन इतना निर्मल होना चाहिये कि जब भी कोई व्यक्ति मिले तो उसे स्पष्ट ख्याल आजाय कि यह श्री नरनारायणदेव

का भक्त है।

●

आत्यंतिक मुक्ति

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

आत्यन्तिक कल्याण भगवान की निष्ठा में समाहित है। निष्ठा में तर्क-वितर्क नहीं होता।

भगवत् तत्व ऐसी तत्व है - जिसका माप नहीं हो सकता। वेदान्त दर्शन में भगवत् तत्व का बड़ी सूक्ष्मता से प्रतिपादन किया गया है। फिर भी भगवत् तत्व का मूल मापदण्ड चरम सीमा इत्यादि का निरुपण सम्भव नहीं है। इसीलिये भगवत् तत्व की चर्चा में वैमत्य है। वेद के वचन में भी ''नेति-नेति'' कहा गया है। इसलिये निष्ठा के विना आत्यन्तिक कल्याण संभव नहीं है। निष्ठा किस आधार पर संभव है ? अनुमान के आधार पर या चमत्कार के आधार पर अनुमान को निष्ठा या आधार मानेंगे तो अनुमान भी बुद्धि का विषय है। बुद्धि माया का तत्व है। मायनिष्ठ बुद्धि हो तो कुछ भी संभव नहीं है। इस तरह निष्ठा मैं दृढता नहीं आवे तो चमत्कार से क्या संभव है ?

स्वानुभूति आत्मा का विषय है। जीव में उसकी दृढता होती है। स्वानुभूति ही निष्ठा है। श्रीजी महाराज के शब्दों में कहें तो जिन्हें भगवत् स्वरुप में निष्ठा हो वे चाहे जितना भी भेद भाव वाला हो उसके विचार में परिवर्तन नहीं होता। वह एक निष्ठ हो जाता है। उसका संबन्धभगवान के साथ हो जाता है। अन्य संबंधगौड़ हो जाता है। चमत्कार या ऐश्वर्य से भले कोई प्रभावित करदें लेकिन एक निष्ठावाले व्यक्ति अपने स्वत्व को नहीं खोता। उसका आत्मकल्याण निश्चित होता है। उसके मार्ग में कोई विध्न नहीं आता।

स्वामिनारायण भगवान के समकालीन नंदुभाई की निष्ठा दृढ थी। नन्दुभाई निर्विकल्पानंद के शिष्य ते। वे अच्छे सत्संगी थे। किसी कारण संप्रदाय में निर्विकल्पानंका अपमान हो गया तो वे संप्रदाय छोड़कर चले गये। बाहर जाकर उनके जितने शिष्य ये सभी ने संप्रदाय की कंठी तोड़देने को कहने लगे। अन्यों की तरह नन्दूभाई के घर भी आये। उनसे भी कहे कि हम जैसे कहे वैसा तुम्हें करना है क्योंकि तुम हमारे शिष्य हो, इसलिये गले में स्वामिनारायण कंठी तोड़ दो। यह सुनते नन्दूभाईने कहा कि आप से हमने कंठी पहनी है आप हमारे गुरु है लेकिन भगवान स्वामिनारायण भगवान है, आप के साथ जो हुआ है उसमें भगवान की भगवत्ता से कोई लेना देना नहीं है। आप जिस तरह आये हैं उसी तरह वापस चले जाइये, और इतना ही बल्कि नौकर को बुलाकर कहे कि ये स्वामी बाहर चले जांय तो दरवाजे तक पानी से धोडालो क्योंकि स्वामिनारायण निष्ठा में शंका करने वाला मरा होता है। ऐसी निष्ठा थी नन्दुभाई की।

किसी चमत्कार या अनुमान द्वारा निष्ठा की प्राप्ति सम्भव नहीं है। नितरां तिष्ठति आभ्यन्तरे या सा निष्ठा - जो सदा आभ्यंतर में परमा के साथ रहता है उसे निष्ठा कहते हैं। भगवत् स्वरुप में स्वामी सेवक का जो भाव है वही निष्ठा है, क्योंकि परमात्मा के नजदीक तक वही लेजाती है। भगवानने कहा है कि मेरा भक्त मेरी भक्ति के सिवाय कुछ भी नहीं चाहता। इसीलिये में उन्हें आत्यंतिक मोक्ष प्रदान करता हूँ।

अक्षरधाम के अधिपति भगवान स्वामिनारायणने भक्तों के आत्यंतिक कल्याण के लिये धर्म तथा भक्ति की शरीर से मानव शरीर धारण किये। अगणित जीवात्माओं का आत्यंतिक कल्ायण किये। विकशल कलिकाल में भी आश्रितों के लिये मोक्ष का मार्ग खोल दिया। श्री भागवत पुराण में लिखा है कि भगवान के भक्त चार प्रकार की मुक्ति की चाहना करते हैं।

''हरि नो जनतो मुक्तिना मागे जन्मोजन्म अवतार रे।
नित्य सेवा नित कीर्तन ओच्छव निरखता नंदकुमार रे॥

इस तरह नरसिंह महेता ने लिखा है। जो चार प्रकार की अपेक्षा रखते हैं वे सकाम भक्त कहलाते हैं। जो मुक्ति नहीं चाहते वे निष्काम भक्त कहलाते हैं। ऐसे भक्त का ही आत्यंतिक कल्याण होता है। ऐसे भक्त वेदोक्त कर्म करें तो पुण्य नहीं होता। इसी तरह वेद से निविद्ध कर्म करने से चाहना रखते हैं। इसलिये भक्ति एवं सत्संग में मन लगाना चाहिये।

●

अपना प्रकाश

- सां.यो. उषाबा (सुरेन्द्रनगर)

महाराज की कृपा से सत्संग की पहचान हुई है। इसका सदा ख्याल रहना चाहिये। भगवान को सदा याद करते रहना

चाहिये । उत्तम भक्त के साथ सम्बन्धरखना चाहिये । आज तो हलाहल कलियुग है । जो सत्संग करेंगे उनका बेड़ा पार होगा अन्य तो भवसागर में डूब जाते हैं । माया के जाल में सभी फंसे हुये हैं । इससे बच पाना पड़ा कठिन है । हमारी भाग्य है कि हमें इतना बड़ा सत्संग मिला है, सच्चे संत मिले है, गुरु पद पर पू. आचार्य महाराजश्री मिले है इससे भी अधिक तो यह कि हमारे आराध्य देवता श्री नरनारायणदेव मिले है । इस संप्रदाय में एक विशेष परंपरा है कि गुरु - संत - शास्त्र की जो आज्ञा पालन करता है उसे कलियुग पास नहीं आता । आज्ञा का लोप होते ही पारिवारिक क्लेश - अन्तर्द्वन्द चालू हो जाता है, यह अनुभव की वात है । अपनी सारी क्रिया में श्रीजी महाराज का अन्तःकरण से स्मरण होता रहे जिससे कलियुगी वातावरण से बचा जा सके । कभी भी कुसंग में मन नहीं लगाना वही माया की तरफ ले जायेगा । या बन्धमें डालेगा या पतन के मार्ग पर लेजायेगा ।

दूसरे चाहे जो भी कहे हमें दृढता के साथ श्रीजी महाराज को प्रसन्न करना है, उसी में आनन्दकी प्राप्ति संभव है । निर्वासनिक जीवन से प्रभु के पास सरलता से पहुंचाजा सकता है । अपने साथ अन्यों को भी सत्संग के मार्ग पर लाने का प्रयास करते रहना चाहिये ।

स्वामी की वातों में लिखा है कि एक को भी उगारते है तो ब्रह्मांड के उबारने का फल मिलता है । इसलिये पुराने संतो के आचार विचार को ध्यान में रखेंगे तो माया के जाल में नहीं फंसेगे । जगत के जीवों का शब्द अपने मन पर प्रभाव न डाले इसका भी सदा ध्यान रखना चाहिये ।

भक्ति-भजन में अधिक समय वीताना चाहिये । मन के साथ इन्द्रिया भटकने लगती हैं लेकिन कब जब आप खाली रहते हैं, अतः खाली बैठने का अवसर ही नहीं आने देना चाहिये मन में निरन्तर प्रभु भजन स्मरण का भाव रहने पर जागतिक व्यवहार पीड़ा कारक नहीं होगा । आज के समय में सच्चा संत मिलना भी दुर्लभ है । सच्चे संतो की पहचान करके संत समागम करने से आत्म शांति के साथ आत्यन्तिक कल्याण करके संत समागम करने से आत्मशांति के साथ आत्यन्ति कल्याण के मार्ग खुल जायेंगे ।

संत समागम के विना निष्काम मार्ग पर चलना बड़ा कठिन है । सच्चा ज्ञान कोई देता नहीं है । अपने जीवन से दूसरों को प्रेरणा मिले ऐसा आचरण करना चाहिये । ऐसी समझ आयेगी तो स्वयं के जीवन में प्रकाश तो मिलेगा ही साथ में अन्यों को भी आप प्रकाशित कर सकते है । संसार के असत्य सुख की तरफ दौड़ने की अपेक्षा सत्य सुख की तरफ गति करना विशेष फलकारक है । क्योंकि संसार का सुख क्षणिक है - मोह, माया, प्रपञ्च, प्रवञ्चन इत्यादि से भरा है । इसलिये भगवान में आत्मबुद्धि रखकर सदा एकनिष्ठ होकर भजन भक्ति करना चाहिये । सत्संग करने से ही यह ज्ञान होगा, प्रकाश मिलेगा जीवन का अलभ्य लाभ मिलेगा, जीवन चरितार्थ होगा ।

●

मनुष्य जन्म का सबसे बड़ा लाभ

- सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेडा)

शास्त्रो में लिखा है कि ''दुर्लभो मनुष्य देहः'' । यह मनुष्य देह बहुत दुर्लभ है । ब्रह्मादिक देवता भी मनुष्य शरीर वाले की इच्छा रखते हैं ।

एक लकहरा था वह जंगल में से लकड़ी लाकर कोयला बनाता था । उस कोयले को वेचकर अपना गुजर वसर करता था । उसी समय वहाँ का राजा वहाँ से निकला, उस लकड़हारे की दयनीय स्थिति देखकर अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि तुम ऐसा क्यों करते हो तब उसने आपवीती बताई । उसके दुःख को सुनने के बाद राजाने अंगूर, नारंगी तथा अन्य फलो वाला एक बगीचा देदिया और कहा कि इससे जो कमाई हो उससे तुम अपना भरण पोषण करना । ऐसा कहकर वहाँ सचा गया । लेकिन दुर्भाग्य उसका साथ नहीं छोड़ी और वह लकड़हारा उन फलों से आच्छादित वृक्षों का फल उपयोग लेने की अपेक्षा वृक्ष को काटकर कोयला बनाकर बेंचने लगा । छ महीने के बाद राजा पुनः वहाँ से निकला तो देखा कि इस बगीचे में अनेकों वृक्ष थे आज एक भी नहीं दिखाई दे रहा है । इसलिये उस लकड़हारे को बुलाकर पूछा कि ये वृक्ष कहाँ गये तब उसने बताया कि सभी वृक्षों को काटकर कोयला बनाकर बेच दिया । राजा यह सुनकर बहुत दुःखी हुआ और कहा कि जिन फलों को बेचकर तूं सुखी हो तो उन्हीं के वृक्षों को काट डाला । इसके मूल को ही नष्ट कर दिया । यह तुमने अच्छा नहीं किया । यह एक उदाहरण है । भगवानने हमें सुन्दर फलों

वाला यह शरीर दिया है । इस बगीचे की रक्षा करना है । इसकी महिमा बिना जाने कोयले के रुप में पंच विषय के सुख में नष्ट नहीं करना चाहिये, अन्यथा मनुष्य जन्म की सार्थकता क्या होगी । इसलिये इसी शरीर से भगवान की भजन भक्ति करनी चाहिये । जिससे ऊर्ध्वलोक की प्राप्ति हो सके ।

भगवान की भक्ति करना ही श्रेष्ठ कर्म है । बाकी तो जगत व्यापार तो अंतिम में काम हीं आयेगा । यह जीव अनेकों बार इन्द्र बना होगा, लेकिन क्या मुक्त हो सका ? एक बार इन्द्रके आसन पर चिउटा चढने का प्रयत्न किया, लेकिन चढ नहीं पाया । बार-बार ऐसा करता रहा लेकिन उसे सफलता नहीं मिली । इन्द्र को अभिमान हो गया कि यह तुच्छ जीव मेरी गद्दी पर बैठ सकता है क्या ? उसी समय भगवान की प्रेरणा से उस चिउटा के भीतर अव्यक्त शक्ति प्रगट हुई और कहने लगी कि इस आसन पर मैं चार बार बैठ चुका हूँ । लेकिन मैं भगवान की भजन भक्ति अच्छी तरह नहीं किया, इसलिये इस योनि में आना पड़ा । इसलिये हमें भी भगवान में श्रद्धा रखकर तथा चिउटे के दृष्टांत को ख्याल रखकर सदा भगवत परायण होकर भजन-भक्ति में समय बिताना चाहिये । जिस संप्रदाय में भगवान स्वामिनारायण, गादीपति आचार्य गुरु के रुप में, संत, सत्शास्त्र मिले हों तो सत्संग छोड़कर अन्यत्र अध्यावसाय करने में अधोगति है, पतन है नाश है । इसलिये सतत प्रयत्नशील होकर अपने जीव का कल्याण कैसे हो यह सोचते रहना चाहिये । तभी मानव जीवन सार्थकता है ।

अनु. पेईज नं. १४ से आगे

भगवान को तूं बुलाले, उन्हीं कानाम लेते ही यमदूत दूर हो गये । अन्तिम समय में काकी को भगवान में विश्वास हो गया । फिर विंदा ने कहा कि काकी आप स्वामिनारायण स्वामिनारायण की धुन कीजिये । भगवान जरुर आयेंगे ।

तुरंत भगवान वहाँ पधारे हैं । यमदूत वहाँ से चले गये - निष्कुलानंद स्वामीने कहा है -

''सर्वे लोक कहे धन्य धन्य,
आवडुं शीयुं डोशीनुं पुन्य ।''

आप देखे कि काकी जीवन में कभी माला फेरी नहीं थी । कभी सत्संग नही की थी, भजन-भक्ति नहीं की थी, फिर भी भगवान उसके किस पुण्य से अपने धाम में ले गये ।

मित्रों ! कितनी अच्छी वात है । इससे हमें दो उपदेश मिलता है प्रथम तो यह कि भगवान के भक्त को भजन भक्ति में विध्न आता है फिर भी अपने मार्ग से कभी हटना नहीं चाहिये । ''मस्तक जाता रे नव मेले टेक विसारी । इससे भगवान प्रसन्न होते हैं । दूसरी वात यह कि भगवान के नाम का प्रताप है । इसका प्रताप प्रभाव ऐसा है कि कितनी बड़ी आपत्ति हो नाम मात्र के स्मरण से रक्षा होती है । यमदूत दूर हट जाते हैं ।

स्वामिनारायण, स्वामिनारायण ऊंचे सादे गाय,
सांभडीने जमजूत तेने दूरथी लागे पाय ।

ऐसे प्रतापी स्वामिनारायण महामंत्र का जप जो भी करेगा उसके अन्तकाल में भगवान स्वामिनारायण स्वयं आकर अपने धाम में ले जायेंगे ।

(श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन पुस्तक के आधार पर)

हमारे आगामी उत्सवों की यादी

कार्तिक शुक्ल-५ लाभ पंचमी ता. ३१-१०-२०११ सोमवार को कांकरिाय मंदिर में बालस्वरुप कष्टभंजन देव का पाटोत्सव ।

कार्तिक शुक्ल-११ देव प्रबोधिनी एकादशी रविवार ता. ६-११-२०११ को तुलसी विवाह प्रारंभ ।

कार्तिक शुक्ल-१२ सोमवार ता. ७-११-११ को वडताल में पाटोत्सव, अहमदाबाद रंग महोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव ।

कार्तिक शुक्ल-१३ मंगलवार ता. ८-११-११ को मकनसर (मोरबी) मंदरि में पाटोत्सव ।

कार्तिक शुक्ल-१४ ता. ९-११-११ बुधवार सिद्धपुर मंदिर में पाटोत्सव ।

कार्तिक शुक्ल-१५ ता. १०-११-११ गुरुवार को मुकुटोत्सव पूनम (देव दीपावली) ।

कार्तिक कृष्ण-२ ता. १२-११-११ शनिवार को सुरेन्द्रनगर मंदिर का पाटोत्सव ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में जलझीलणी एकादशी को गणपतिजी की शोभायात्रा निकाली गई

संप्रदाय के परंपरागत श्री नरनारायणदेव गद्दी के प्रथम आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादीज महाराजश्री के समय से भादो शुक्ल पक्ष-११ जलझीलणी एकादशी के दिन श्री गणपतिजी की शोभायात्रा अहमदाबाद मंदिर से धूमधाम से नारायणघाट के किनारे पर विसर्जित होती है। इस परंपरा का पालन वर्तमान में भी किया जाता है। इस वर्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री संत-हरिभक्तों के साथ तथा अहमदाबाद मंदिर से श्री नरनारायणदेव उत्सवीय मंडल के साथ नारायणघाट मंदिर पर दोपहर २-०० बजे पहुंचे थे । जहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री गणपतिजी का पूजन आरती किए थे। उसके बाद जलक्रीडा साबरमती के पानी में विधिपूर्वक की थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संत-हरिभक्तों के साथ शाम को मंदिर के आंगन में कीर्तन भक्ति करते हुए शोभायात्रा का आगमन हुआ था । समग्र आयोजन स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, जे.के. स्वामी आदि संत मंडलने किया था । नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामीने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था। - मुनि स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर

धार्मिक तथा ऐतिहासिक नगर वडनगर में परंपरागत प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी गुरु महंत स्वामी हरिसेवादासजी के मार्गद्रशनसे भादो शुक्लपक्ष-१ जलझीलणी एकादशी को श्री ठाकुरजी की शोभायात्रा का श्री स्वामिनारायण मंदिर से सुबर १०-३० बजे पू. शा. विश्वप्रकाशधासजीने आरती करके प्रारंभ करवाया था । जिसमें बेंडबाजा, विजय ध्वज, भजन-मंडली, उत्सवीय मंडल के साथ ५०० जितने हरिभक्त जुड़े थे । इस प्रसंग पर स.गु. भंडारी स्वामी रामचरणदासजी श्री वल्लभस्वामी, ऋषिप्रसाददासजी, महंत शा. नारायणवल्लभदासजी, शा. विश्वप्रकाशदासजी तथा ट्रस्टी मंडल के सभ्य भी उपस्थित थे । शाम को ६-३० बजे प्रसादी के नाग जहाँ श्रीहरि की जलक्रिडा करवाकर उत्सव मनाकर हरिभक्तों के घर घर श्री ठाकुरजी का पदार्पण करवाया था । रात में ८-०० बजे शोभायात्रा मंदिर वापस लौटी थी । इस प्रसंग पर प.भ. भावसार सागरकुमार दिलीपकुमारने आरती का लाभ लिया था ।

- महंत शा. नारायणवल्लभदासजी

जयपुर मंदिर में अष्टम पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) के मार्गदर्शन से तथा मंदिर के महंत शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी की प्रेरणा से प.भ. शरदचंद ठाकोरलाल पटेल परिवार के यजमानपद पर श्री राधाकृष्णदेव का ८ वाँ पाटोत्सव सावन कृष्णपक्ष-५ ता. १९-८-२०११ के शुकवार को विधिपूर्वक मनाया गया । स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा माणसा मंदिर के महंत स.गु. शास्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने ठाकोरजी का वेदोक्त षोडशोपचार महाभिषेक करके अन्नकूट की आरती की थी । उसके बाद प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार तथा जयपुर के हरिभक्तों को आशीर्वाद देकर सर्वोपरि श्रीहरि तथा धर्मकुल का माहात्म्य सुनाया था। - कृष्ण भगत, जयपुर

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा सगु. शा.स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से सावन महीने में श्री सिद्धेस्वर महादेव समक्ष महारुद्रयज्ञ धूमधाम से मनाया गया । जिसकी पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से आरती उतारकर की गयी थी ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रासंगिक सभा में समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद दिये थे। उसके बाद संध्या आरती उतारने पधारे थे । अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संतगण पधारे थे । सभा संचालन शा. यज्ञप्रकाशदासने किया था। पू. देवकृष्ण स्वामीने ठाकुरजी को सुंदर वस्त्रों को धारण करवाकर दर्शन करवाया था ।

सावन महीने में शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीने सुबह-शाम श्रीमद् भागवत् दशम स्कंधकी कथा हरिभक्तों को सुनाई थी । सावन कृष्णपक्ष अमावस्या को शाम की कथा की विधिपूर्वक

पूर्णाहुति की थी । इस प्रसंगस.गु. शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी, महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी, महंत श्री आनंद स्वामी, तथा नरोत्तम भगत सभा में उपस्थित थे ।

प्रसादी के पवित्र स्थान में जिस स्थान पर श्रीहरिने बैठकर भूदेवों को दक्षिणा दी थी । उस प्रसादी की भूमि पर बिराजमान श्री सिद्धेश्वर महादेव तथा श्री राधाकृष्ण देव के सानिध्य में श्रा.कृ ८ के सोमवार को सिद्धेश्वर महादेव में बर्फ का हिमालय बनाकर अमरनाथ के दिव्य दर्शन भाविकों को करवाये थे ।

सावन कृष्णपक्ष-८ श्री कृष्णजन्माष्टमी के प्रसंग पर रात्रि ११ से १२ तक-कीर्तन भक्ति तथा भव्य महाआरती की गयी थी । जिस में हजारों भाविकोने जन्मोत्सव दर्शन का लाभ लिया था ।- पा. नरोत्तम भगत, डॉ. हिरेनभाई

हिंमतनगर मंदरि में समूह महापूजा

अ.सौ.प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा अ.सौ. प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से महावीर नगर में नूतन हरिमंदिर में ता. २८-८-२०११ को श्री स्वामिनारायण महिला मंडल का २४ वर्ष पूर्ण होने पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । जिस में १०८ बहनोने लाभ लिया था । अहमदाबाद से पधारे तीन भूदेवों ने षोडशोपचार विधि-महापूजा करवाई थी । महापूजा के मुख्य यजमान पद का लाभ जयाबहन, ललितभाई, सरोजबहन गौतमभाई तथा कपिलाबहन अश्विनभाई के परिवारने लाभ लिया था ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर हिंमतनगर मंदिर के महंत शा. हरिजीवनदासने श्री घनश्याम महाराजश्री की आरती उतारकर दर्शन का महालाभ दिया था । महापूजा का आयोजन स्वामिनारायण महिला मंडल की तरफ से नीलाबहन के. पटेल तथा शांताबहन मणीभाई पटेलने किया था । - स्वामिनारायण महिला सत्संग मंडस, हिंमतनगर

हर्षद कोलोनी श्री स्वामिनारायण मंदिर में समूह महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा दासभाई की प्रेरणा से सावन कृष्णपक्ष-१४ को समहू महापूजा का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । एप्रोच मंदिर के संत तथा मूली के संत सत्यप्रकाशदासजी आदि संत भी पधारे थे । पवित्र सावन महिने में शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी (मूली) तथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने तीन तीन दिन तक कथा वार्ता का लाभ दिया था । महापूजा के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये ।

- गोरधनभाई सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर में भादो शुक्लपक्ष-११ को जलझीलणी एकादशी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

बरसात के कारण मंदिर में साम ४ से ६ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून तथा शा.स्वामीने कथावार्ता की थी । ठाकुरजी का नाव में पदार्पण करके आरती की । यजमान पद का लाभ प.भ. अमृतलाल मणीलाल काछीयाने लिया था ।- हिरने जे.

श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में चातुर्मास में आनेवाले उत्सव जैसे कि झूलोत्सव, जन्माष्टमी तथा जलझीलणी एकादशी आदि उत्सवा धूमधाम से मनाये गये । जलझीलणी उत्सव में श्री ठाकुरजी की भव्य पालकी यात्रा बेन्डबाजें के साथ कीर्तनभक्ति करते हुए तालाब के पास पहुँची । जहाँ ठाकुरजी की आरती की गई । शा. विश्वस्वरुप स्वामीने कथा वार्ता का लाभ दिया था। - नरेश पटेल

उवारसद गाँव में भव्य सत्संग सभा

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानकी असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद में पवित्र सावन महीने में ता. १५-८-११ के सोमवार को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर प.भ. शैलेषभाई तथा प.भ. बिपीनभाई के आयोजन से संतो में पू. स्वामी जगतप्रसादासजी (मूलीवाले) पू.शा. घनश्याम स्वामी (माणशा महंत), पू. देव स्वामी (अयोध्या महंतश्री), पू. राम स्वामी (आदरज), पू. विश्वविहारी स्वामी, पू. जे.पी. स्वामी (पू. महंत स्वामी अहमदाबाद के शिष्य), स्वामी विष्णुप्रसाददास, निलकंठ स्वामी, पू. स्वामी हरिकृष्णदासजी, दिव्यस्वरुपदास, शा.वा. चैतन्यस्वरुपदासजी आदि संत गण पधारे थे ।

संतोने सर्वोपरि भगवान का माहात्म्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य शास्त्रों के दृष्टांत के साथ समझाया था ।

पिछले कई वर्षो से संतो के मंडल को आमंत्रित करके यजमान प.भ. ईश्वरभाई मगनभाई पटेलने ग्रामजनों को सुंदर लाभ दिया करते हैं ।

अंत में ठाकरुजी का अष्टक गा कर आरती करके भोग

लगाकर संतोने प्रसाद ग्रहण किया था । ६०० जितने गाँ वके हरिभक्तों ने प्रसाद लिया था। - घनश्यामभाई पटेल नारणपुरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पवित्र सावन महिने में यहाँ के मंदिर के ठाकुरजी को कलात्मक झुलोत्सव पर सजाकर झुलाया गया था । श्री कृष्ण जन्माष्टमी के प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर से पू. गवैया स्वामी के शिष्य हरिजीवन स्वामी तथा बलदेव स्वामी तथा प्रेमस्वरुप स्वामी पधारे थे । कीर्तन भक्ति तथा कथा का लाभ दिया था । कई हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गए । मंदिर की तरफ से कक्षा-१० तथा १२ में अच्छे गुणों से उतीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को संतो के वरद् हाथों से हरिभक्तों की तरफ से प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया ।

- नविनभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सावन महिने में ठाकुरजी को कलात्मक सुंदर झूले पर सजाकर झुलाया गया । इस प्रसंग पर कोठारी विष्णुभाई, भीखाभाई, शैलेषभाई तथा अंबालालभाईने प्रेरणात्मक सेवा की। - कोठारी विष्णुभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाम (टेबला फली)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं । पवित्र सावन महिने में भिन्न-भिन्न झूले पर शिंगार करके भगवान को झुलाया था । श्री कृष्ण जन्माष्टमी को हरिभक्तोंने भजन कीर्तन करते हुए रात्रि में १२-० बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती करके उत्सव मनाया । भादो शुक्ल पक्ष-११ जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी की शोभायात्रा के प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर से शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा निलकंठस्वामी पधारे थे। संत के साथ हरिभक्तोंने श्री गणपतिजी की पालकी दहेगाँव के सुंदर तालाब के पास पहुँचकर शोभायात्रा का विसर्जन किया था । संतोने सुंदर कथावार्ता का लाभ दिया । इस प्रसंग पर प.भ. कोठारी अरविंदभाई अमीन, हर्षदभाई पटेल आदि हरिभक्तोंने सुदंर सेवा की। - हर्षदभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाणीनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाणीनगर में प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से भावि पीढी के बच्चों में सत्संग के विकास के लिए पिछले १६ वर्ष से प्रत्येक हप्ते बाल सभा का आयोजन किया जाता है । नारायणघाट मंदिर से शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने तीन दिन रात्री कथा करके हरिभक्तों को कथा का लाभ दिया था । बहनों के आग्रह पूर्ण आमंत्रण से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । जलझीलणी एकादशी के दिवस पर शोभायात्रा का आयोजन किया गया । मंदिर की तरफ से हरिभक्तों के लिए फलहार की व्यवस्था की गई थी। - देवाणी रणछोडभाई

विसनगर

विसगनर श्री स्वामनारायण मंदरि में सावनमहिने में श्री नरनारायणदेव् युवक मंडल तथा प.भ. श्री उदयनभाई महाराजा तथा प.भ. कोठारी पटेल कान्तिलाल रणछोडदास के मार्गदर्शन अनुसार स.गु. निष्कुलानंद काव्य अंतर्गत भक्तिनिधिकी पांच दिवसयी कथा पारायण का आयोजन किया गया । वक्तापद पर वडनगर मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी बिराजमानथे । बड़ी संख्या में हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लिया था । - निकुंज भावसार, श्री न.ना.देव युवक मंडल, विसनगर

आभर (बनासकांठा) गाँव में सत्संग सभा का आयोजन

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान वनविचरण के समय सिद्धपुर पधारे थे । परंतु बनासकांठा में नहीं पधारे थे । यहाँ के लोग अपने संप्रदाय से अपरिचित थे । परंतु सभी के जीवन में शुभ संस्कार थे । उनमें भी श्री नरनारायणदेव के आश्रित प.भ. नटुभाई कानाबार सभी के लिये प्रेरणारुप है । वर्तमान में यहाँ नरनारायणदेव के ३०० जितने चुस्त आश्रित है । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ प्रत्येक एकादशी को सत्संग सभा की जाती है । आषाठ कृष्ण पक्ष-११ को ११ वी सतसंग सभा में प.भ. शंकरलाल जे. अरवाणी रुनिवाला के यहाँ शांतिनगर सोसायटी में ५०० से भी अधिक हरिभक्तोंने सत्संग सभा में पधारे थे । धून, भजन, कीर्तन, वचनामृत (२७३) वाचन आदि कथावार्ता तथा ठाकुरजी की आरती-नित्य-नियम भोग करने के बाद सभा में प.भ. नटुभाई कानाबरने धोषित किया था कि, श्रीजी महाराज की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव का शिखरबद्ध मंदिर निर्माण होगा । जो कोई श्री स्वामिनारायण भगवान के नाम का अपने मुख से उच्चारण करके भजन करेंगे उनका कल्याण होगा । हमारा संकल्प भगवान पूर्ण करे ऐसी प्रार्थना ।

- रमेशभाई कानाबार

श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल कालुपुर, अहमदाबाद

श्री नरनारायणदेव पीठ के भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नराराय़ण बाल सत्संग मंडलके सभी बच्चों को ता. ४-९-२०११ को श्री स्वामिनारायण म्युजियम ले जायाग गया । सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रसादी की अलौकिक वस्तुओं का दर्शन करके बालक गण भाव विभोर हो गये । और् पुनः अपने परिवार के साथ आने की वात की श्री स्वामिनारायण म्युजियम के व्यव्थापक प.भ. दासभाई तथा प.भ. रतिभाई पटेलने स्कीम कमिटी के सभ्यश्री) सुदंर सहयोग दिया था । संचलाक, गोपालभाई मोदी, श्री न.ना.देव बाल सत्संग मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण में सावन कृष्णपक्ष-८ श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, श्री स्वामिनारायण भगवान का झुलोत्सव प्रदर्शन नौका विहार के रुप में करवाया गया । इस महोत्सव के अंर्गत अहमदाबाद मंदिर से पधारे हुए स्वा. केशवचरणदासजी तथा घनश्याम स्वामीने गीमद् भागत दशम स्कंधकी चार दिवसीय रात्री पारायण करके हरिभक्तों को कथा का पान करवाया था । श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।कई दाता यजमान पद का लाभ लिये थे ।- प्रकाशभाई गज्जर, पियुष बारोट

जेतलपुर के संत मंडल द्वारा गाँवो में सत्संग प्रवृति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पूज्य महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से संत मंडल द्वारा निम्न लिखित गाँवो में सत्संग सभाएँ, झुलोत्सव, जन्माष्टमी तथा झलझीलणी उत्सव धूमधाम से मनाए गये ।

ट्रेन्ट, छोटे उभड़ा, बड़े उभड़ा, मांडल, वणोद तथा सीतापुर गाँव में स.गु. वयोवृद्ध संत श्यामचरणदासजी स्वामी तथा शा. भक्तिनंदनदासजीने गाँव के प्रेमी भक्तजनों को सर्वोपरि इष्टदेव तथा धर्मकुल के माहात्म्य के साथ शास्त्रों का अमृतपान करवाया विरमगाँव, कालीयाणा, नवांगपुरा तथा सुरनपुरा में स.गु. शा.स्वा. हरिऊप्रकाशदासजी, महंत श्री के.पी. स्वामी (जेतलपुर), शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी तथा विद्यार्थी संत श्यामसुदंरदासजी आदि संत मंडलने हरिभक्तों को कथामृत पान करवाकर सत्संग का सुन्दर लाभ दिया था ।

जेतलपुर में झलझीलणा एकादशी का उत्सव

श्रीहरिने संप्रदाय में उत्सवों की जो परंपरा प्रस्थापित की है उस कारणवश भादो शुक्लपक्ष-११ को जलझीलणी एकादशी को जेतलपुर में पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा महंतश्री के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार ठाकुरजी की पालकी संत मंडल के साथ वाडी के विद्यार्थी संतो तथा हरिभक्तों के मंडल के साथ धून भजन करते हुए तीर्थ स्थान स्वरुप तालाब के किनारे पहुंचकर ठाकुरजी को जलक्रिडा करवाई। देव तालाब से शोभायात्रा में टाकुरजी की पालकी संत मंडलने जिस प्रकार श्रीजी महाराज १०० बार पधारे थे ।उसी प्रकार पदार्पण करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था ।

-शा.भक्तिनंदनदास

श्री नरनारायणदेव बाल मंडल बापुनगर द्वारा सत्संग बेग का वितरण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से बापुगनर श्री नरनारायणदेव बाल मंडल द्वारा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथों से ३०० बच्चो को सत्संग बेग का वितरण किया गया । प्रासंगिक सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी को धर्म, संस्कृति, संस्कार के साथ उच्च शिक्षण प्राप्त करने का उपदेश दिया । एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी भी इस प्रसंग पर उपस्थित थे । सत्संग बेग में बाल सत्संग, बाल सत्संग गुंजन नोटबुक, पेन आदि चीजों के साथ बापुनगर के बच्चों के लिए ६०० कीट तैयार की गई ।जिससे बालको को प्रोत्साहन मिलेगा ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर द्वारा डेन्टल केम्प

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से बापुनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सीमातीत प्रवृति निमित्त एप्रोच मंदिर में डेन्टल केम्प का सुंदर आयोजन किया गया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने इस प्रसंग पर उपस्थित रहकर दीप प्रज्वलित करके केम्प को प्रारंभ किया । २५० जितने भाई बहनोंने केम्प में दांत के रोगों का निदानकरवाया था । एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजीने प्रसाद देकर सभी को आशीर्वाद दिए थे ।- श्री न.ना.देव युवक मंडल, बापुनगर

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर मंदिर में झुलोत्सव दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की

आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी स.गु. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में आषाढ कृष्णपक्ष-६ से सावन कृष्णपक्ष-२ तक ठाकुरजी समक्ष कलात्मक झुलोत्सव बनाकर भगवान को झुलाया था । सावन शुक्ल पक्ष-११ से सावन कृष्णपक्ष-२ तक सभा मंडल में प्रदर्शन में एक साथ १२ भिन्न-भिन्न झुलोत्सव जैसे को अनाज, धान, पंचमेवा, लेशा गहेनों के, आदि कलात्मक झुलोत्सव के दर्शन करवाये । इस प्रसंग का दैनिक पेपर तथा इलेक्ट्रोनिक मीडियाने कवरेज करके समस्त गुजरात की धार्मिक जनता को दर्शन करवाये । समग्र आयोजन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के पंकजभाई परीख आदि युवानोने किया था ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

ओलपाडा में मूली के हाला के हरिभक्तों के द्वारा सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ नियमित रुप से सत्संग सभा होती है । जिसमें सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य तथा धर्मकुल की महिमा शास्त्र के दृष्टांत के साथ समझाया था । कथावार्ता, कीर्तन, धून, नित्य, नियम आदि किया गया । जीरागढ के शांति भगतने सावन महिने में सुदंर कथा की । सभी को एक ही उपदेश दिया गया कि जो भगवान को पसंद हो वही करना तथा महाराजश्री की आज्ञ-अनुवृति में रहकर सत्संग करना चाहिए । प.पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सभी भक्तों को दर्शन करना चाहिए । सुरेन्द्रनगर मंदिर से (रामपुरा) संतगण पधारकर कथावार्ता का लाभ देतें है। - विवेकभाई वरु, ओलपाड़

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (अमेरिका)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से प्रत्येक उत्सवों को धूमधाम से मनाया जाता है।

सावन कृष्ण पक्ष-८ श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया । भादो शुक्ल पक्ष-४ तथा ११ को जलझीलणी एकादशी को भगवान को धूमधाम से नौका विहार करवाने तालाब के पास ले जामा गया । हरिभक्तों ने बड़ी संख्या में लाभ लिया था। - रमेश पटेल

पियोरिया (ई.एस.एस.ओ. चेप्टर अमेरिका

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पियोरिया चेप्टर में हरिभवसागर प्रत्येक रविवार को नियमित रुप से सत्संग सभा का आयोजन करके भगवान का भजन-कीर्तन करते हैं।

आगामी उत्सवो में जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी धूमधाम से मनाई गई । कई हरिभक्तों ने लाभ लिया। - रमेश पटेल

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव मंदिर कोलोनीया के छठे पाटोत्सव प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत, पार्षद मंडल के साथ पधारे थे । पाटोत्सव के उपलक्ष में सभी मंगल स्तोत्र की कथा संप्रदाय के विद्वान कथाकार संत स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजीने की । इस प्रसंग पर पू. बिन्दुराजा वराज भगत के साथ पधारी थी ।

चेरीहील, विहोकन, पारसपेनी तथा न्युयोर्क से संत मंडलने पधारकर कथा वार्ता का लाभ दिया था । बालको द्वारा सुंदर सांस्कृतिक प्रोग्राम किए गए थे ।

पाटोत्सव के शुभ दिवस शनिवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ । हजारो भक्तजनों ने इस अलौकिक दर्शन का लाभ लिया था । उसके बाद अन्नकूट तथा शिंगार आरती प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुई ।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारो द्वारा प.पू. महाराजश्री का पूजन करके आरती की गई । उसके बाद बहनों की सभा में बिन्दुराजा का बहनोंने स्वागत किया । महंत ज्ञान स्वामीने सुदंर कथा की । पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, धर्मकिशोर स्वामी, शा. व्रजवल्लभदास, शा. माधव स्वामी, शा. माधवप्रसाददासजी, आदि संतोने देव तथा आचार्यश्री का माहात्म्य कहा । अंत में समस्त सभा को प.पू. महाराजश्रीने अपने आशीवर्चन में कहा कि, तीर्थ में यात्रा करने जाते है तो जो पुण्य मिलता है वही पुण्य यहाँ भगवान के दर्शन करने में मिलता है । सत्संग में ही सुख मिलता है । भावि पेढी को अच्छे संस्कार मिलेंगे । मनुष्य सुख के लिए भटकता रहता है । पैसे से सुख तो मिलता है परंतु भगवान को प्राप्त करने का आनंद नहीं मिलता । छठे पाटोत्सव में छोटे से यजमान बनकर यथाशक्ति सेवा दीजिए । उनको महाराज सुखी करेंगे । ऐसी श्री नरनारायणदेव चरणों में प्रार्थना ।

कोलोनीया मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाया गया

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदरि कोलोनीया में ४० जुलाई

शनिवार को भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १४ वाँ प्राकट्योत्सव युवानों तथा बालकोने हरिभक्तो की उपस्थिति में मंदिर, सिंहासन तथा ठाकुरजी के समक्ष भव्य रोशनी में प.पू. लालजी महाराजश्री की तसवीर का पूजन करके केक को काटकर मनाया। यजमान परिवारोने भी पूजा का लाभ लिया । महंत स्वमी ज्ञानजीवनदासजीने प.पू. लालजी महाराजश्री के बाल चरित्रो को यादकरके धर्मकुल की महिमा कही ।

– प्रविणकुमार शाह

केलेगेरी केनेडा में सत्संग सभा

प.पू. बडे महाराजश्री तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से प.भ. जयेशभाई के वर्य केलेगरी में नियमितरुप से सत्संग सभा का आयोजन होता है। जिस में इनके परिवार, मित्र, तथा आसपास के भाविक भक्त भी जुड़ते है। एक स्पेशयल सभा के लिए ही रखा गया है । जेतलपुर मंदिर द्वारा प्रकाशित पुस्तिका प.पू. आचार्य महाराजश्री की तरफ से मिलती है। अभी तक कुल ५० साप्ताहिक सभा हुई है। इस सभा से सभी के आध्यात्मिक शांति का एहसास होता है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ने प.भ. जयेशभाई की इस सत्संग प्रवृति की प्रशंसा पर आशीर्वाद दिये।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर : प.भ. पार्षद उका भगत गुरु सगु. स्वा. नारायणप्रसाददासजी ता. २-९-२०११ तो श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अडालज (जि. गांधीनगर) : प.भ. कोठारी बातुभाई प्रभुदास ता. १९-८-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

साबरमती - अहमदाबाद : प.भ. सूरजबनह हरिभाई पटेल (धमासणावाले) ता. २८-८-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई।

अहमदाबाद (घाटलोडीया) : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. हसमुखभाई सोमाभाई पटेल (गुलाबुरावाले) ता. २४-८-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

जोरावरनगर (जी. सुरेन्द्रनगर) : श्री राधाकृष्णदेव मूली तथा धर्मकुल के अनन्य आश्रित प.भ. कानजीभाई गोविंदभाई (उ.८८ वर्ष) ता. २-९-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अहमदाबाद : प.भ. रमणलाल कनैयालाल मोदी (अहमदाबाद मंदिर के विदेश के पर्यटको के लिए गारडर्स की सेवा देनेवाले) ता. २४-९-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

प्रांतीज : प.भ. रमणीकभाई गणपतराम सोनी (उ. ७८ वर्ष) ता. १८-९-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान तथा धर्म परायण ऐसे प.भ. राजेशभाई शाह, प.भ. भरतभाई तथा प.भ. हिरेनभाई शाह के मातुश्री प.भ. लीलावतीबहन विठ्ठलदास शाह (उ. ८० वर्ष) भादो शुक्ल पक्ष-१० के गुरुवार ता. १२-९-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई।

वडनगर : प.भ. मोदी हरिभाई शामलदास (वनडगर मंदिर के ट्रस्टी) (उ. ६८ वर्ष) ता. २८-९-२०११ बुधवार को को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अहमदाबाद-जीवराजपार्क : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सक्रिय सभ्य प.भ. भरतभाई तथा धनंजयभाई ठक्कर के पिताश्री प.भ. कांतिलाल वि. ठक्कर ता. २४-८-२०११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

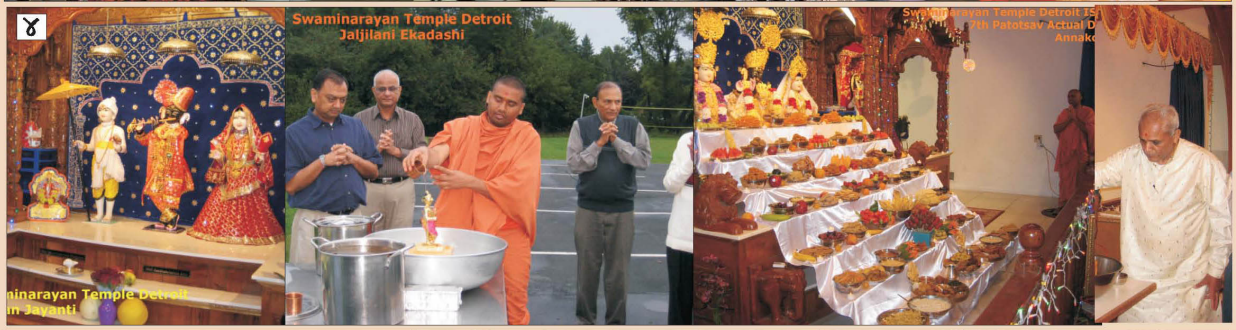

(૧)બદ્રીનારાયણ મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો ષોડશોપચાર અભિષેક કરતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી સાથે જે.પી. સ્વામી, બ્ર.પૂ. રાજેશ્વરાનંદજી, ગૌલોક સ્વામી અને યજમાન પ.ભ. કાંતિભાઈ પટેલ (અમેરિકા) (૨)શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ બાપુનગર દ્વારા આયોજીત ડેન્ટલ કેમ્પ ખુલ્લો મૂકતા અને બાળકોને સત્સંગ બેગનું વિતરણ કરતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી (૩)જયપુર (રાજ.) મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે યજમાન પ.ભ. શરદચંદ્ર ઠાકોરલાલ પટેલને પ્રસાદીનો ખેસ આપી સન્માન કરતા પૂ.શા.સ્વામી આત્મપ્રકાશદાસજી સાથે ઘનશ્યામસ્વામી (૪) ડિટ્રોઈટ મંદિરમાં વામન જયંતી દર્શન અને જલ ઝીલણી એકાદશીના ઠાકોરજીને જળયાત્રાના કરાવતા શા. બ્રહ્મવિહારીદાસજી તથા પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટ દર્શન કરતા યજમાન કાંતિભાઈ (૫)પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીની પ્રેરણા માર્ગદર્શનથી શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમ(મંદિર કાલુપુર)ની માલિકીની વિંડમીલ (પવનચક્કી-વિજળી ઉત્પન્ન માટે) ના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે પૂજન કરતા પ.ભ. શ્યામ કરશનભાઈ રાઘવાણી (૬) ઝુલાસણ મંદિરમાં હિંડોળા

Registered under RNI-GUJGUJ/2007/20221"Permitted to post at
Ahd PSO on 11th every month under postal REG. NO. GAMC.-003/9-11 issued SSP Ahd Valid
up to 31-12-2011 Licenced to Post without pre payment No. CPMG/GJ/01/07-08 valid up to 31/12/2011

ભરતખંડના અધિષ્ઠાતા શ્રી નરનારાયણદેવના નિજ મંદિર અને સિંહાસનના જીર્ણોધ્ધારમાં સેવા કરવાનો અમૂલ્ય લ્હાવો